# ज़कात सदक़ात

## अहकाम व फ़ज़ाइल

मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

# ज़कात सद्क़ात

## (अहकाम व फ़ज़ाइल)

मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

9897626182

© जुमला हुक़ूक़ नाशिर के लिये महफ़ूज़ हैं

नाम किताब– ज़कात सद्क़ात
(अहकाम व फ़ज़ाइल)

मुअ़ल्लिफ़– डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

इशाअ़त– फर‘वरी–2026 (1447) हिजरी

कम्पोज़िंग– अमन & ज़ैनुल आ़बदीन
9897626182
9045442223

ISBN-NO- 978-93-5717-292-9

क़ीमत–150 रुपये

# फ़ेहरिस्त मज़ामीन


| न० शुमार | उन्वानात | सफ़हा |
|---|---|---|
| 01 | हम्द........................................ | 09 |
| 02 | तम्हीद...................................... | 11 |
| 03 | ज़कात की फ़रज़ियत.......................... | 13 |
| 04 | ज़कात, सद्क़ात देने वालों को अज्रे अज़ीम की बिशारत....................... | 16 |
| 05 | ज़कात, सद्क़ात देने वालों के माल में मज़ीद इज़ाफ़ा होता है................ | 23 |
| 06 | राहे खुदा में ख़र्च करने वाले मोमिन हैं और उनकी बख़्शिश का वाअ़दा......... | 26 |
| 07 | माल जमाअ करने वालों के लिये सख़्त अ़ज़ाब की वईद........................ | 28 |
| 08 | सोना, चाँदी जमाअ करने वालों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब की वईद............. | 31 |
| 09 | राहे खुदा में ख़र्च न करने की मज़म्मत.. | 40 |
| 10 | बुख़्ल और ईमान बन्दे के दिल में जमाअ़ नहीं हो सकते....................... | 43 |
| 11 | बख़ील जन्नत में नहीं जायेगा............ | 44 |
| 12 | राहे खुदा में ख़र्च न करने वालों को फ़रिश्तों की बद्दुआ़..................... | 45 |
| 13 | ज़कात किसे दी जाये...................... | 47 |
| 14 | सद्क़ा, ख़ैरात के मुस्तहक़ीन............. | 49 |
| 15 | अफ़ज़ल सद्क़ा............................. | 54 |

| न० शुमार | उन्वानात | सफ़हा |
|---|---|---|
| 16 | साइल के साथ अच्छा बरताव करना..... | 55 |
| 17 | जो अल्लाह के वास्ते से माँगे उसे कुछ न कुछ ज़रुर दो.......................... | 56 |
| 18 | राहे खुदा में माल ख़र्च करने की तर्ग़ीब.. | 58 |
| 19 | ज़कात से माल पाक होता है........... | 62 |
| 20 | राहे खुदा में ख़र्च करने वाले नेकोकारों का सिला जन्नत है........................ | 64 |
| 21 | अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने वाले क़ाबिले रश्क़ हैं........................ | 64 |
| 22 | अल्लाह की रिज़ा हासिल करने के लिये माल ख़र्च करने की मिसाल............. | 67 |
| 23 | राहे खुदा में ख़र्च करने वाले नेक लोगों की अ़लामत.............................. | 68 |
| 24 | सद्क़ा आग से बचाव है.................. | 68 |
| 25 | एक वक़्त ऐसा आयेगा कि सद्क़ा लेने वाला न होगा............................. | 69 |
| 26 | पाकीज़ा माल से दिया सद्क़ा अल्लाह की | |
| 27 | बारगाह में कुबूल होता है.............. | 70 |
| 28 | पोशीदा सद्क़े की फ़जीलत................ | 71 |
| 29 | मुस्तहक़ीन को खाना खिलाना.......... | 72 |
| 30 | दरख़्त व खेत से जानवर खाये तो सद्क़े का सवाब मिलता है..................... | 76 |
| 31 | सद्क़ा ख़ैरात गुनाहों का कफ़्फ़ारा है..... | 76 |
| 32 | राहे खुदा में ख़र्च अल्लाह की रिज़ा व कुर्बत हासिल करने का ज़रिया है......... | 77 |

| न० शुमार | उन्वानात | सफ़हा |
|---|---|---|
| 33 | अल्लाह की राह में माल देना अल्लाह को देने के मुतरादिफ़.................. | 78 |
| 34 | सदक़ात ख़ैरात व ज़कात की अदायगी में जल्दी करना.................... | 80 |
| 35 | राहे खुदा में ख़र्च करना ख़ौफ़ और ग़म से निजात का बाइस.................. | 81 |
| 36 | राहे खुदा में ख़र्च करना नफ़ाअ़ देने वाली तिजारत है.................... | 82 |
| 37 | सदक़ात का दिखावा बर्बादी का बाइस है. | 82 |
| 38 | मुराद पूरी होने के बाअ़द सद्क़ा देना.... | 83 |
| 39 | ज़मीन की पैदावार में ग़रीबों को हिस्सा न देना ख़सारे का बाइस............... | 83 |
| 40 | एक नेकी का बदला दस गुना.......... | 84 |
| 41 | सद्क़ा नारे दोज़ख़ से रुकावट है........ | 85 |
| 42 | सद्क़ा बुराई और बदबख़्ती के सत्तर दर‘वाज़े बन्द करता है................. | 85 |
| 43 | कोई मुसीबत सद्क़े के ऊपर से नहीं गुज़र सकती........................ | 85 |
| 44 | सद्क़ा अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब व गुस्से को ठन्डा कर देता है................ | 86 |
| 45 | तू ख़र्च कर अल्लाह तुझपे ख़र्च करेगा... | 86 |
| 46 | बीमारी का इलाज सद्क़े से करो......... | 87 |
| 47 | सद्क़े का सवाब दस गुना............... | 87 |
| 48 | अह्लो अ़याल पर ख़र्च करना सद्क़ा है.. | 87 |
| 49 | मरने वाले की तरफ़ से सद्क़ा........... | 88 |

| न० शुमार | उन्वानात | सफ़्हा |
|---|---|---|
| 50 | औ़रत का शौहर के माल से सद्क़ा...... | 90 |
| 51 | हर नेकी और भलाई सद्क़ा है............ | 90 |
| 52 | हर जोड़ पर सद्क़ा वाजिब है............ | 93 |
| 53 | बेवा और मसाकीन के लिये दौड़ धूप करने वाले की मिसाल.................... | 95 |
| 54 | यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नती... | 95 |
| 55 | मस्जिद में ग़रीब मिस्कीन को सद्क़ा ख़ैरात देना................................ | 96 |
| 56 | बन्दे का माल वही जो आगे भेजा......... | 96 |
| 57 | बन्दे का माल तीन तरह का होता है..... | 97 |
| 58 | बन्दे के तीन दोस्त........................ | 98 |
| 59 | मुर्दे के साथ तीन चीज़ें जाती हैं.......... | 99 |
| 60 | आगे भेजा हुआ माल अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में.......................... | 99 |
| 61 | हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने सारा माल सद्क़ा कर दिया........................... | 100 |
| 62 | हज़रत उ़स्मान का राहे खुदा में सद्क़ा... | 101 |
| 63 | हक़ीक़ी मिस्कीन की अ़लामत............ | 102 |
| 64 | बिला हाजत माल बढ़ाने की ग़रज़ से माँगना गोया आग के अंगारे माँगना...... | 103 |
| 65 | रोज़े क़यामत बिला हाजत माँगने वाले के चेहरे पर गोस्त नहीं होगा............... | 103 |
| 66 | तीन क़िस्म के लोगों का माँगना नाजाइज़. | 104 |
| 67 | तीन क़िस्म के लोगों का माँगना हलाल... | 104 |
| 68 | जो माँगने से बचे अल्लाह उसे बचाता है. | 105 |

| न० शुमार | उन्वानात | सफ़हा |
|---|---|---|
| 69 | जो किसी से कुछ न माँगे तो उसे जन्नत की ज़मानत.................. | 106 |
| 70 | जब कोई हाजत हो तो अल्लाह के हुज़ूर पेश करो.................. | 106 |
| 71 | क़नाअ़त वाला शख़्स कामयाब है.......... | 106 |
| 72 | आले रसूल को सद्क़ा देना जाइज़ नहीं.. | 107 |
| 73 | आले रसूल को हदिया देना जाइज़....... | 107 |
| 74 | सद्क़ा फ़ित्रा.................. | 108 |
| 75 | ज़कात के मसाइल.................. | 110 |
| 76 | फलों और अनाज पर ज़कात देना........ | 110 |
| 77 | ज़कात कब फ़र्ज़ होती है.............. | 110 |
| 78 | सोने व चाँदी की ज़कात.............. | 111 |
| 79 | ज़मीन की पैदावार की ज़कात.......... | 113 |
| 80 | साग सब्ज़ी में ज़कात नहीं............. | 113 |
| 81 | गाय और बैल की ज़कात.............. | 114 |
| 82 | ऊँट और बकरियों की ज़कात.......... | 114 |
| 83 | अंगूर व ख़जूर की ज़कात............. | 116 |
| 84 | पड़ी हुई व गढ़ी हुई चीज़ की ज़कात.... | 116 |
| 85 | सोने चाँदी की ज़कात अदा न करना अ़ज़ाब का बाइस है.................. | 117 |

## -: बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम :-

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजूबिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सय्यिआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादियालहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू।

तमाम खूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है कि जिसने अपनी रह़मत और मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ो तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्द व सना न करता हो और हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और जो अव्वल है किसी शैः से उसकी इब्तिदा नहीं हुई वो किसी शैः से मिलकर नहीं बना और वो लाज़वाल है वो हर ऐ़ब से पाक है वो शह रग़ से भी ज़्यादा क़रीब तर है शक्लो सूरत में हर शैः से बईद तर है उसके बन्दों का कोई लम्हा उससे मख़्फ़ी नहीं इंतिहाई तारीक रात में भी ज़मीनो आसमान की जुमला अशिया उससे पोशीदा नहीं, बहुत सी आवाज़ों का जमाअ़ होना उसे-

परेशान व हैरान नहीं कर सकता मुख़्तलिफ़ ज़बानों का सुनना उसको किसी एक से मशगूल नहीं करता और जो बग़ैर आज़ा के सबकी सुनता है और वो कायनात की हर शैः का आ़लिम है और वो हय्युल क़य्यूम ज़ात है तमाम आसमान व ज़मीन पर उसी की बादशाहत है और वो अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है।

दुरुदो सलाम हो रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर जो ज़ाहिर व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर क़यामत के दिन प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे और अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ो अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बियाकिराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुज़ूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है।

अल्लाह तआ़ला की बेशुमार रहमत व सलामती हो अह्ले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो क़यामत के दिन मुहिब्बाने अह्ले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़तो मुसीबत के दरमियान ढाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुताह्हरात और आपकी आल व असहाब और जुमला औलिया किराम व सूफ़िया इ़ज़ाम और उन पर जो अल्लाह के मुक़र्रब मख़सूस बन्दे हैं।

# -: तम्हीद :-

अल्लाह तआ़ाला की तौहीद और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की रिसालत की का इक़रार करना व शहादत देना और नमाज़ के बाद ज़कात अदा करना इस्लाम का तीसरा फ़र्ज़ रुकन है अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने कुरान मजीद में सैंकड़ो मक़ामात पर नमाज़ के साथ साथ ज़कात का ज़िक्र व ताकीदी हुक्म फ़रमाया और अल्लाह तआ़ाला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ज़कात व सदक़ात के फ़ज़ाइल इरशाद फ़रमाये और ज़कात अदा न करने वालों को सख़्त अ़ज़ाब की वईद भी फ़रमाई अल्लाह तआ़ाला ने माल हमें सिर्फ़ इसलिये नहीं दिया कि हम सिर्फ़ उससे अपनी ज़रुरियात को ही पूरा करें बल्कि अल्लाह तआ़ाला ने माल हमें इसलिये अ़ता किया कि अपनी ज़रुरियात के साथ साथ ज़रुरत मंद फुक़रा, मसाकीन, बेवा और यतीम और रिश्तेदारों और मुसाफ़िरों वग़ैराह पर भी ख़र्च करें और इन सब का हम पर ये हक़ है जो हमे हर हाल में अदा करना होगा वरना रोज़े क़यामत हमारी गिरफ़्त होगी और हम से हमारे माल का हिसाब लिया जायेगा

जो माल हम ज़रुरत मंद फुक़रा, मसाकीन, बेवा और यतीम और रिश्तेदारों और मुसाफ़िरों वग़ैराह पर ख़र्च करते और उनकी माली इमदाद करते हैं तो हम उन पर कोई एहसान नहीं करते बल्कि उनका एहसान हम पर है जो वो हमारे माल को कुबूल करते हैं कि जिस के बाइस हम पर जो उनके हुक़ूक़ वाजिब हैं हम उन हुक़ूक़ की अदायगी कर पाते और अल्लाह तआ़ाला का

हम पर अज़ीम एहसान व करम है कि उसने हमें माल अ़ता किया और उस माल को हमने फुक़रा, मसाकीन व मुस्तहक़ीन पर ख़र्च किया तो अल्लाह तआ़ला इसके बदले में हमें मज़ीद अ़ता फ़रमाता और अज्र व सवाब भी अ़ता फ़रमाता है जिसका हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते अल्लाह तआ़ला का हम मुसलमानों पर अज़ीम फ़ज़्लो करम है कि वो खुद ही हमें माल अ़ता करता है और अपनी राह में ख़र्च कराने के बाअ़द हमें अज्र व सवाब अ़ता फ़रमाता है यानी कि माल भी उसी का और दिया भी उसी की राह में और अपना ज़ाती कुछ भी न था फिर भी अल्लाह तआ़ला हमें अज्र व सवाब अ़ता फ़रमाता है और ये बात बड़ी ही क़ाबिले तवज्जो और ग़ौर करने वाली है कि अ़ता भी उसकी और राहे खुदा में ख़र्च करने तौफ़ीक़ भी उसी की

ज़कात एक ऐसा फ़रीज़ा है जिसका तआ़ल्लुक़ इ़बादत के ऐतबार से हुकूकुल्लाह से और अल्लाह तआ़ला के वो बन्दे जो ग़रीब, मिस्कीन, माअ़ज़ूर, बेवा और यतीम वग़ैराह हैं उनकी माली इमदाद के ऐतबार से ज़कात का तआ़ल्लुक़ हुकूकुल इ़बाद से है और ज़कात व सदक़ात से अज्र व सवाब के साथ साथ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी हासिल होती है और साथ ही अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब व उसके अ़ज़ाब से तहफ़्फ़ुज़ भी है मगर अफ़सोस आज अक्सर लोग ज़कात की अदायगी नहीं करते बस थोड़ा सा माल ग़रीब, मिस्कीन को देते हैं और ज़कात की पूरी अदायगी का दिखावा करते हैं अल्लाह तआ़ला हम सब मुसलमानों को ज़कात की पूरी अदायगी की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमां। आमीन

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

# -: ज़कात की फरज़ियत :-

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

और नमाज़ क़ायम (किया) करो और ज़कात देते रहा करो और तुम अपने लिये जो भी नेकी आगे भेजोगे उसे अल्लाह तआ़ला के हुजूर पालोगे जो कुछ तुम कर रहे हो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला उसे देख रहा है।
(सूरह-बक़राह-2/110)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

हालांकि उन्हें फ़क़त यही हुक्म दिया था कि सिर्फ़ उसी के लिये अपने दीन को ख़ालिस करते हुये अल्लाह की इ़बादत करें (हर बातिल से जुदा होकर) हक़ की तरफ़ यकसूइ पैदा करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दिया करें और यही सीधा और मज़बूत दीन है।
(सूरह-बय्यिना-98/05)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

तुम नमाज़ (के निज़ाम) को क़ायम रखो और ज़कात की अदायगी करते रहो और रसूल की इताअ़त बजा लाओ ताकि तुम पर रहम किया जाये।
(सूरह-नूर-24/56)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

और तुम नमाज़ क़ायम किया करो और ज़कात अदा किया करो और (तुम) अल्लाह तआ़ला (के दामन) को मज़बूती से थामे रखो वो अल्लाह ही तुम्हारा मददगार व कारसाज़ है पस वो कितना अच्छा कारसाज़ है और कितना अच्छा मददगार है। (सूरह-हज-22/78)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की इताअ़त करते रहो और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों से खूब आगाह है। (सूरह–मुजादला–58/13)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और अपने घरों में सुकून से क़याम पज़ीर रहना और पुरानी जाहलियत की तरह ज़ैबो ज़ीनत का इज़हार न करना नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की इताअ़त करते रहना। (सूरह–अहज़ाब–33/33)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात देते रहो और अल्लाह को क़र्ज़े हसन दिया करो और जो भलाई तुम अपने लिये आगे भेजोगे उसे अल्लाह के हुजूर बेहतर और अज्र में बुजुर्गतर पाओगे और अल्लाह तआ़ला से बख़्शिश तलब करते रहो अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बे हद रहम फ़रमाने वाला है। (सूरह–मुज़म्मिल–73/20)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दिया करो और रुकूअ़ करने वालों के साथ (मिलकर) रुकूअ़ किया करो (सूरह–बक़राह–2/43)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल को यमन की तरफ़ भेजा तो उन से फ़रमाया जब तुम्हारा

गुज़र अहले किताब (यहूद व नसारा) पर हो तो उनसे कहना कि गवाही दो अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं जब वो तेरा कहना मानलें तो उनसे कहना तुम पर अल्लाह तआ़ला ने पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं फिर जब वो ये मान लें तो तुम उनसे कहना कि अल्लाह तआ़ला ने तुम पर ज़कात फ़र्ज़ की हैं जो मालदारों से लेकर फ़ुक़रा को दी जाती है। (नसाई–सुनन–2/117–ह०-2439)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से बयान फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे कोई वसीयत फ़रमांयें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया नमाज़ क़ायम करो ज़कात अदा करो रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखो बैतुल्लाह का हज व उ़मराह करो और अपने माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक करो और सिला रहमी करो और मेहमानों की ख़िदमत करो भलाई का हुक्म दो बुराई से मनाअ़ करो और हमेशा अह्ले हक़ का साथ दो।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/790–ह०-7276)

➡ हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल आप मुझे कोई ऐसा अ़मल बताये कि जो मुझे जन्नत में पहुँचा दे तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करो और किसी तरह से उसका शरीक न ठहराओ और तुम नमाज़ क़ायम करो व ज़कात अदा करो और रिश्ते दारी को क़ायम रखो।
(नसाई–सुनन–1/451–ह०-469)

# ज़कात व सदक़ात देने वालों को अज्रे अ़ज़ीम की बिशारत

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
जो लोग (अल्लाह की राह में) शब व रोज़ अपने माल पोशीदा व ज़ाहिर ख़र्च करते हैं तो उनके लिये उनके रब के पास उनका अज्र है और (रोज़े क़यामत) उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो रंजीदा होंगे। (सूरह–बक़राह–2/274)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
बेशक जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक आअ़माल किये और नमाज़ क़ायम रखी और ज़कात देते रहे तो उनके लिये उनके रब के पास उनका अज्र है और (रोज़े क़यामत) उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो रंजीदा होंगे। (सूरह–बक़राह–2/277)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
और (ऐ हबीब) आ़जिज़ी करने वालों को ख़ुश ख़बरी सुनादें ये वो लोग हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता तो उनके दिल डरने लगते हैं और जो मुसीबत उन्हें पहुँचती है तो उस पर सब्र करते हैं और नमाज़ क़ायम रखने वाले हैं और जो कुछ हमने उन्हें अ़ता फ़रमाया है उसमें से (राहे ख़ुदा में) ख़र्च करते हैं। (सूरह–हज–22/35)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
ये वो लोग हैं जिन्हें उनका अज्र दो बार दिया जायेगा इस वजह से कि उन्होंने सब्र किया और वो बुराई को

भलाई के ज़रिये दिफ़ाअ़ करते हैं और उस अ़ता में से जो हमने उन्हें बख़्शी (उसमें से वो राहे खुदा में) ख़र्च करते हैं। (सूरह–क़सस–28/54)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
बेशक जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत करते और नमाज़ क़ायम रखते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अ़ता किया है उसमें से (राहे खुदा में) ख़र्च करते हैं पोशीदा भी और ज़ाहिर भी ऐसी (उख़्र‘वी) तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी ख़सारे में न होगी ताकि अल्लाह तआ़ला उनका अज्र उन्हें पूरा पूरा अ़ता फ़रमाये और (अल्लाह तआ़ला) अपने फ़ज़्ल से उन्हें मज़ीद नवाज़े बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला बड़ा ही शुक्र कुबूल फ़रमाने वाला है। (सूरह–फ़ातिर–35/29,30)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
(जो) हिदायत है और ईमान वालों के लिये खुश ख़बरी है जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं। (सूरह–नम्ल–27/2,3)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
जो लोग नमाज़ क़ायम करते और ज़कात अदा करते हैं और वो लोग जो आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं यही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (सूरह–लुक़मान–31/4,5)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
और मेरी रहमत हर चीज़ पर वुसअ़त रखती है सो मैं अ़नक़रीब उस (रहमत) को उन लोगों के लिये लिख दूँगा जो परहेज़गारी इख़्तियार करते हैं और ज़कात देते

रहते हैं और वही लोग हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं। (सूरह–आअ़राफ़–7/156)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

उनमें से पुख़्ता इ़ल्म वाले और मोमिन लोग उस (वही) पर जो आपकी तरफ़ नाज़िल की गई और उस (वही) पर जो आपसे पहले नाज़िल की गई है (बराबर) ईमान लाते हैं और वो नमाज़ क़ायम करने वाले और ज़कात देने वाले (हैं) और अल्लाह तआ़ला और क़यामत पर ईमान रखने वाले (हैं) ऐसे ही लोगों को हम अ़नक़रीब बड़ा अज्र अ़ता फ़रमांयेंगे। (सूरह–निसा–4/162)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

पस जिसने (अपना माल अल्लाह तआ़ला की राह में) दिया और परहेज़गारी इख़्तियार की और उसने (राहे खुदा में ख़र्च करके व तक़वा के ज़रिये) अच्छाई (यानी दीने हक़ और आख़िरत) की तसदीक़ की तो अ़नक़रीब हम उसे आसानी (यानी रज़ाये इलाही) के लिये सहूलत फ़राहम कर देंगे। (सूरह–लैल–92/05 ता 07)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और उस (आग) से उस बड़े परहेज़गार शख़्स को बचा लिया जायेगा जो अपना माल (अल्लाह की राह में) देता है कि (अपनी जान व माल की) पाकीज़गी हासिल करे और किसी पर उसका कोई एहसान नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो मगर वो सिर्फ़ अपने रब की रज़ा जोई के लिये (माल ख़र्च कर रहा है) और अ़न–क़रीब वो (अल्लाह की अ़ता से और अल्लाह उसकी वफ़ा से) राज़ी हो जायेगा।
(सूरह–लैल–92/17-21)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

और अपने रब की बख़्शिश व जन्नत की तरफ़ तेज़ी से बढ़ो जिसकी वुसअ़त में सब आसमान और ज़मीन आ जाते हैं जो परहेज़गारों के लिये तैयार की गई है ये वो लोग हैं जो फ़राख़ी और तंगी (दोंनों हालतों) में ख़र्च करते हैं और गुस्सा ज़ब्त करने वाले और लोगों से (उनकी ग़लतियों पर) दरगुज़र करने वाले हैं और अल्लाह तआ़ला एहसान करने वालों से मुहब्बत करता है। (सूरह-आले इमरान-3/133, 134)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

(भलाई है उस शख़्स के लिये) जो किसी को ख़ैरात का या नेक काम का या लोगों में सुलह कराने का हुक्म देता है और जो कोई ये काम अल्लाह तआ़ला की रज़ा जोई के लिये करे तो अ़नक़रीब हम उसे अ़ज़ीम अज्र अ़ता फ़रमायेंगे। (सूरह-निसा-4/114)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

और तुम जो माल भी ख़र्च करो सो वो तुम्हारे अपने फ़ायदे के लिये है और अल्लाह तआ़ला की रज़ा जोई के सिवा तुम्हारा ख़र्च करना मुनासिब ही नहीं और तुम जो माल ख़र्च करोगे (उसका अज्र) तुम्हें पूरा पूरा दिया जायेगा और तुम पर कोई जुल्म नहीं किया जायेगा। (सूरह-बक़राह-2/272)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

कौन शख़्स है जो अल्लाह तआ़ला को क़र्ज़े हसना के तौर पर क़र्ज़ दे तो वो उसके लिये उस (क़र्ज़) को कई गुना बढ़ाता रहे और उसके लिये बड़ी अ़ज़मत वाला अज्र है। (सूरह-हदीद-57/11)

और अल्लाह तआ़ला को क़र्ज़े हसन दिया करो और जो भलाई तुम अपने लिये आगे भेजोगे उसे अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर बेहतर और अज्र में बुजुर्गतर पाओगे और अल्लाह तआ़ला से बख़्शिश तलब करते रहा करो अल्लाह तआ़ला बहुत बख़्शने वाला बेहद रहम फ़रमाने वाला है। (सूरह–मुज़म्मिल–73/20)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह के साथ एक जनाज़े में थे उस मौक़ेअ़ पर आपने फ़रमाया तुममें से कोई ऐसा नहीं है जिसका ठिकाना जन्नत या दोज़ख़ में लिखा न जा चुका हो तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह फिर क्यों न हम अपनी तक़दीर पर भरोसा कर लें फिर आपने फ़रमाया कि अच्छे अ़मल करते रहो कि हर शख़्स को जिसके लिये वो पैदा किया गया है उसके मुताबिक़ उसे तौफ़ीक़ दी जाती है फिर आपने ये आयत पढ़ी ‘‘पस जिसने (अपना माल अल्लाह तआ़ला की राह में) दिया और परहेज़गारी इख़्तियार की और उसने (राहे ख़ुदा में ख़र्च करके व तक़्वा के ज़रिये) अच्छाई (यानी दीने हक़ और आख़िरत) की तसदीक़ की तो अ़नक़रीब हम उसे आसान राह चलने (और रज़ाये इलाही) के लिये सहूलत फ़राहम कर देंगे और जिसने बुख़्ल किया और (राहे हक़ में माल ख़र्च करने से) बेपर‘वाह बना रहा और उसने अच्छाई (यानी दीने हक़ व आख़िरत) को झुटलाया तो अ़नक़रीब हम उसे सख़्ती यानी अ़ज़ाब की तरफ़ बढ़ने के लिये की सहूलत देंगे और उसका माल उसके किसी काम नहीं आयेगा जब वो हलाकत के गढ़े में गिरेगा बेशक राहे हक़ दिखाना हमारे ज़िम्मे है बेशक हम ही आख़िरत और दुनिया के मालिक हैं। (सूरह–लैल–92/5 ता 13)(बुख़ारी–सहीह–4/872–ह०-4945)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि (जिन दीनारों पर अज्र मिलता है उनमें से) एक दीनार वो है जिसे तूने अल्लाह की राह में ख़र्च किया एक दीनार वो है जिसे तूने किसी की गर्दन की आज़ादी के लिये ख़र्च किया एक दीनार वो है जिसे तूने मिस्कीन पर सद्क़ा किया एक दीनार वो है जिसे तूने अपने घर वालों पर ख़र्च किया इनमें सबसे अ़ज़ीम अज्र उस दीनार का है जिसे तूने अपने घर वालों पर ख़र्च किया।
(मुस्लिम–सहीह–2/342–ह०-2311)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इन्सान जो कुछ अपनी ज़ात व अपने अह्ल व अ़याल पर सवाब की नियत से ख़र्च करता है तो अल्लाह तआ़ाला उसका अज्र देता है लिहाज़ा अपने अह्ल व अ़याल पर ख़र्च किया करो फिर अगर कुछ बच रहे तो क़रीबी रिश्तेदार को दो और फिर भी बच रहे तो जिसे चाहो उसे दो।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/77–ह०-62)

➡ हज़रत मूसा बिन अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हे सब से बड़ा सद्क़ा न बताऊँ अ़र्ज़ किया गया ज़रुर बतायें आपने फ़रमाया कि एक एसी बच्ची है जो तुम्हारे सपुर्द कर दी गई है और तुम्हारे सिवा उसका कोई कमाने वाला नहीं है तो उसे ख़र्चा देना सबसे बड़ा सद्क़ा है।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/85–ह०-80)

➡ हज़रत इयाज़ बिन हिमार मुजाशिई (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जन्नती लोग तीन क़िस्म के हैं इन्साफ़ करने वाले हाकिम और सद्क़ा ख़ैरात करने वाले और वो जो अपने रिश्तेदारों और मुसलमानों के लिये नरम दिल हैं।
(मुस्लिम–सहीह–5/363–ह०-7207)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब अ़ौरत अपने शौहर के माल में से ख़ैरात करे तो दोंनों को बराबर अज्र मिलता है यानी शौहर व उसकी बीवी को और किसी के अज्र में कोई कमी नहीं होती शौहर को कमाई का अज्र और अ़ौरत को माल ख़र्च करने का अज्र मिलेगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/403–ह०-671] 672)

➡ हज़रत इयाज़ बिन हिमार रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जन्नती लोग तीन क़िस्म के हैं 1-हुकूमत के साथ इन्साफ़ करने वाले लोग 2- सदक़ा व ख़ैरात करने वाले लोग 3- और वो शख़्स जो अपने रिश्तेदारों और मुसलमानों के लिये नरम दिल हों और जो पाक दामन पाकीज़ा खुल्क़ वाला हो और अ़यालदार भी हो मगर किसी के सामने अपना हाथ न फ़ैलाता हो और दोज़ख़ियों की पाँच क़िस्में हैं 1- वो लोग जिनको तमीज़ नहीं कि बुरी बात से बचें 2-वो लोग जो चोर हैं 3- वो शख़्स जो फ़रेब करता है 4- बख़ील (कंजूस) व झूटा 5- गालियाँ बकने वाला व फुहश कलामी (बेहूदा बात) कहने वाला। (मुस्लिम–सहीह–5/363–ह०-7207)

➡ हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो तुम ख़र्च करते हो कि जिससे तुम्हारा मक़सद रिज़ाए इलाही हो तो तुम्हें उस पर अज्र दिया जोयगा हत्ता कि तुम अपनी बीवी के मुँह में जो लुक़मा डालते हो उस पर भी तुम्हें अज्र दिया जायेगा। (बुख़ारी–सहीह–1/112-ह०–56)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/602-ह०–6555)

## ज़कात व सदक़ात देने वालों के माल में मज़ीद इज़ाफ़ा होता है

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
कौन है जो अल्लाह तआ़ला को क़र्ज़े हसन दे फिर वो उसे कई गुना बढ़ा देगा और अल्लाह ही तुम्हारे रिज़्क़ में तंगी व कुशादगी करता है और तुम उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे। (सूरह–बक़राह–2/245)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
फ़रमां दीजिये बेशक मेरा रब अपने बन्दों में से जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ कुशादा फ़रमां देता है और वो जिसके (चाहता है रिज़्क़) तंग कर देता है और तुम (अल्लाह की राह में) जो कुछ भी ख़र्च करोगे तो वो तुम्हें उसके बदले में और ज़्यादा अ़ता करेगा और वो सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला है। (सूरह–सबा–34/39)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
और उनका क्या नुक़सान था अगर वो अल्लाह तआ़ला पर व योमे आख़िरत पर ईमान ले आते और जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दिया था उसमें से (राहे ख़ुदा

में) ख़र्च करते और अल्लाह तअ़ाला उनके हाल से खूब वाक़िफ़ है बेशक अल्लाह तअ़ाला ज़र्रा बराबर भी जुल्म नहीं करता और अगर कोई नेकी हो तो उसे दो गुना कर देता है और अपने पास से बड़ा अज्र अ़ता करता है। (सूरह–निसा–4/39, 40)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**
कौन शख़्स है जो अल्लाह तअ़ाला को क़र्ज़े हसना के तौर पर क़र्ज़ दे तो वो उसके लिये उस (क़र्ज़) को कई गुना बढ़ाता रहे और उसके लिये बड़ी अ़ज़मत वाला अज्र है। (सूरह–हदीद–57/11)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**
और जो माल तुम सूद पर देते हो ताकि लोगों के माल में मिलकर बढ़ता रहे तो वो अल्लाह के नज़दीक नहीं बढ़ेगा और जो माल तुम ज़कात (व ख़ैरात) में देते हो (फ़क़त) अल्लाह तअ़ाला की रिज़ा चाहते हुये तो वही लोग (अपना माल अल्लाह तअ़ाला के नज़दीक) कसरत से बढ़ाने वाले हैं। (सूरह–रुम–30/39)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**
बेशक जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत करते और नमाज़ क़ायम रखते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अ़ता किया है उसमें से (राहे खुदा में) ख़र्च करते हैं पोशीदा भी और ज़ाहिर भी ऐसी (उख़र‘वी) तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी खसारे में न होगी ताकि अल्लाह तअ़ाला उनका अज्र उन्हें पूरा पूरा अ़ता फ़रमाये और (अल्लाह तअ़ाला) अपने फ़ज़्ल से उन्हें मज़ीद नवाज़े बेशक अल्लाह तअ़ाला बड़ा बख़्शने वाला बड़ा ही शुक्र कुबूल फ़रमाने वाला है। (सूरह–फ़ातिर–35/29,30)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**
अगर तुम अल्लाह को (इख़्लास और नेक नीयती से) अच्छा क़र्ज़ दोगे तो वो उसे तुम्हारे लिये कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह तआ़ला बड़ा क़द्रदान (और) बड़ा बुर्दबार है वो हर पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला, सब पर ग़ालिब, बड़े इक़्तिदार का मालिक और बड़ी हिकमत वाला है।
(सूरह-तग़ाबुन-64/17, 18)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**
जो लोग अल्लाह तआ़ला की राह में अपना माल ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल (उस) दाने की सी है जिससे सात बालियाँ उगें (और फिर) हर बाली में सौ दाने हों (यानी सात सौ गुना वो अज्र पाते हैं) और अल्लाह तआ़ला जिसके लिये चाहता है (तो इससे भी ज़्यादा) इज़ाफ़ा फरमाता है और अल्लाह तआ़ला बड़ी वुसअ़त वाला खूब जानने वाला है। (सूरह-बक़राह-2/261)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**
और अल्लाह तआ़ला सूद को मिटाता है (यानी सूदी माल से बरकत को ख़त्म करता है) और सद्क़ात को बढ़ाता है (यानी सदक़ा के ज़रिये माल की बरकत को ज़्यादा करता है) और अल्लाह तआ़ला किसी ना शुक्रे और गुनाहगार से मुहब्बत नहीं करता।
(सूरह-बक़राह-2/276)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सद्क़ा देने से कभी माल नहीं घटता (बल्कि बढ़ता है) और जो मुआ़फ़ कर देता है-

तो अल्लाह तआ़ला उसकी इ़ज़्ज़त को बढ़ाता है और जो बन्दा अल्लाह तआ़ला के लिये आ़जिज़ी करता है तो अल्लाह तआ़ला उसका दर्जा बुलन्द फ़रमाता है। (मुस्लिम–सहीह–5/60–ह०-6592)

## राहे खुदा में ख़र्च करने वाले मोमिन हैं और उनकी बख़्शिश का वाअ़दा

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
ये वो लोग हैं जो नमाज़ क़ायम रखते हैं और जो कुछ हमने अ़ता किया है उसमें से (राहे खुदा में) ख़र्च करते हैं (हक़ीक़त में) यही लोग सच्चे मोमिन हैं उनके लिये उनके रब की बारगाह में बड़े दरजात हैं और मग़फ़िरत और बुलन्द दर्जा रिज़्क़ है। (सूरह–अनफ़ाल–8/3,4)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
शैतान तुम्हें (अल्लाह की राह में ख़र्च करने से रोकने के लिये) तंगदस्ती का ख़ौफ़ दिलाता है और बेहयाई का हुक्म देता है और अल्लाह तआ़ला तुमसे बख़्शिश और फ़ज़्ल का वाअ़दा फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ला बड़ी वुसअ़त वाला खूब जानने वाला है।
(सूरह–बक़राह–2/268)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
अगर तुम अल्लाह को (इख़लास और नेक नीयती से) अच्छा क़र्ज़ दोगे तो वो उसे तुम्हारे लिये कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह तआ़ला बड़ा क़द्रदान (और) बड़ा बुर्दबार है वो हर पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला, सब पर ग़ालिब, बड़े इक़्तिदार व कमाल हिकमत वाला है। (सूरह–तग़ाबुन–64/17, 18)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

आप उनके अमवाल में से सद्क़ा (और ज़कात) वसूल कीजिये कि आप उस (सदक़े) के बाइस उन्हें गुनाहों से पाक फ़रमांदें और उन्हें (ईमान और माल की पाकीज़गी से) बरकत बख़्श दें और उनके हक़ में दुआ़ फ़रमांयें बेशक आपकी दुआ़ उनके लिये बाइसे तस्कीन है और अल्लाह तआ़ला खूब सुनने वाला खूब जानने वाला है। (सूरह–तौबा–9/103)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और सद्क़ा व ख़ैरात करने वाले मर्द और सद्क़ा व ख़ैरात करने वाली औ़रतें और रोज़ादार मर्द व रोज़ा दार औ़रतें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द व हिफ़ाज़त करने वाली औ़रतें और कसरत से अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करने वाले मर्द व ज़िक्र करने वाली औ़रतें, अल्लाह तआ़ला ने इन सबके लिये बख़्शिश और अ़ज़ीम अज्र तैयार कर रखा है। (सूरह–अहज़ाब–33/35)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर करके दो तो ये भी अच्छा है (इससे दूसरों को तरग़ीब होगी) और अगर तुम उन्हें मख़्फ़ी रखो और मुहताजों को पहुँचा दो तो ये तुम्हारे लिये और बेहतर है और अल्लाह तआ़ला (उस ख़ैरात की वजह से) तुम्हारे कुछ गुनाहों को तुमसे दूर फ़रमां देगा और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आअ़माल से बाख़बर है। (सूरह–बक़राह–2/271)

# माल जमाअ़ करने वालों के लिये सख़्त अ़ज़ाब की वईद

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः-**
(ख़राबी और तबाही है उस शख़्स के लिये) जो माल जमाअ़ करता है और गिन गिन कर रखता है (और) वो समझता है कि उसका माल उसके पास हमेशा रहेगा हरगिज़ नहीं वो ज़रुर हुतमा (यानी तोड़ फोड़ व चूरा चूरा कर देनी वाली आग) में डाला जायेगा और क्या तुम जानते हो कि हुतमा (तोड़ फोड़ व चूरा चुरा कर देने वाली) क्या है वो अल्लाह तअ़ाला की भड़काई हुई आग है जो दिलों पर चढ़ जायेगी और वो आग उन पर हर तरफ़ से बन्द की हुई होगी और वो लोग (उस आग के) लम्बे चौड़े सुतनो में (घिरे हुये) होंगे।
(सू०-हुमाज़ाह-104/2 ता 9)

मज़कूरा आयात में उन लोगों की मज़म्मत बयान की गई जो दुनिया का माल जमाअ़ करने के ऐसे हरीस हैं कि जैसे उनको दुनिया में हमेशा रहना है और वो लोग अपने माल की ज़कात भी अदा नहीं करते और माल की मुहब्बत व रग़बत के सबब यादे इलाही और अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं तो ऐसे ही लोगों को दोज़ख़ के उस तबक़े में फेंका जायेगा जिसकी आग उनके जिस्म के हर हिस्से को खा जायेगी और उनकी हड्डियों को चूरा चूरा कर देगी हमारे मुआ़शरे में ऐसे मालदारों की कसीर ताअ़दाद है जो इस मर्ज़ में मुब्तिला हैं जो ये समझते हैं कि वो अपने माल के साथ दुनिया में हमेशा ज़िन्दा रहेंगे हालांकि न वो खुद दुनिया में हमेशा रहेंगे

और न ही उनका माल हमेशा रहेगा क्योंकि दुनिया की हर शैः को अपने मुताअय़्यन वक़्त पर फ़ना होना है माल की शदीद मुहब्बत इन्सान को नेक आअ़माल की तरफ़ माइल नहीं होने देती बल्कि वो उसे शर व गुनाह की तरफ़ ले जाती है और उसे उस माल में से ज़कात अदा करने से रोकती है और इस तरह धीरे धीरे बन्दे के गुनाहों में कसीर इज़ाफ़ा होता रहता है और बिल आख़िर वो कसीर गुनाहों का मुरतकिब हो जाता जो उसे दोज़ख़ में ले जाने के लिये काफ़ी होते हैं और ऐसे लोगों को दोज़ख़ की आग जिस्म के ज़ाहिरी व अन्दरुनी हिस्सों को पूरी तरह से जकड़ लेगी और जलाकर ख़ाक कर देगी हत्ता कि उसकी हड्डियाँ चूर चूर हो जायेंगी और ऐसे लोगों को आग में डालकर दर'वाज़े बन्द कर दिये जायेंगे और फिर आग की लौ सुतूनो से मज़बूत कर दी जायेगी ताकि वो लोग उस आग से बाहर न निकल सकें और जब 'वो उस आग से बाहर निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिये जायेंगे'।
(सू०-सज्दा-32/20)

ये आग जहन्नुम की दूसरी आग के मुक़ाबले ज़्यादा सख़्त होगी उन्हें वहाँ मौत नहीं आयेगी तो उस वक़्त उनका क्या हाल होगा जो एक लम्हें के लिये दुनिया की आग को बर्दाश्त नहीं कर सकते तो वो उस आग को कैसे बर्दाश्त करेंगे जो तीन हजार साल तक दहकाई गई वो आग उन पर चारों तरफ़ से चढ़ जायेगी।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दोज़ख़ की आग एक हज़ार बरस तक दहकाई गई हत्ता कि वो सुर्ख हो गई फिर

एक हज़ार बरस तक दहकाई गई हत्ता कि वो सफ़ेद हो गई फिर वो एक हज़ार बरस तक दहकाई गई यहाँ तक कि वो सियाह हो गई और अब वो सियाह और अंधेरी है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/376-ह०–2591)
(इब्ने माजा–सुनन–3/409-ह०–4320)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम्हारी ये आग जिसे तुम जलाते हो ये दोज़ख़ की आग के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या ये दुनिया की आग काफ़ी नहीं थी तो आपने फ़रमाया इससे उनहत्तर हिस्से ज़्यादा गर्मी दोज़ख़ में है और उसके हर हिस्से में इतनी गर्मी है। (मुस्लिम–सहीह–6/385-ह०–7165)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुनिया की आग दोज़ख़ की आग के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है अगर ये आग दो बार पानी से बुझायी न जाती तो तुम इससे फ़ायदा न उठा सकते थे अब ये आग अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करती है कि दोबारा उसको दोज़ख़ में न डाला जाये। (इब्ने माजा–सुनन–3/411-ह०–4318)
(बुख़ारी–सहीह–3/482-ह०–3265)
(मुस्लिम–सहीह–5/347-ह०–7165)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/375-ह०–2589)
(दारमी–सुनन–2/515-ह०–2847)

हुतमा दोज़ख़ की आग का वो तबक़ा है कि जिसमें जो

कुछ भी डाला जाये तो वो उसको तोड़ फोड़ कर चूरा चूरा कर देती है तो वो लोग इसी आग में डाले जायेंगे जो लोग माल को जमाअ़ करते और राहे खुदा में ख़र्च नहीं करते और न पूरी ज़कात निकालते हैं और माल की मुहब्बत व रग़बत के बाइस यादे इलाही से ग़ाफ़िल और अपनी आख़िरत से बे पर‘वाह और बे फ़िक्र व कसीर गुनाहों के मुरतकिब हैं ये आग उन लोगों पर चारो तरफ़ से चढ़ जायेगी फिर उनके सीनों तक पहुँच जायेगी फिर उनके दिलों पर चढ़ जायेगी और इन्सान के जिस्म में दिल से ज़्यादा कमज़ोर कोई भी चीज़ नहीं होती कि थोड़ी सी अज़्ज़ियत दिल को बहुत तकलीफ़ पहुँचाती है पस उस वक़्त उनका क्या हाल होगा जब उन्हें दोज़ख़ में झोंका जायेगा।

## सोना व चाँदी जमाअ़ करने वालों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब की वईद

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

जो लोग सोना और चाँदी जमाअ़ करके रखते हैं और उसमें से राहे खुदा में ख़र्च नहीं करते तो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुनादें जिस दिन उस (सोना, चाँदी और माल) को दोज़ख़ की आग में तपाया जायेगा और फिर उस तपे हुये माल से उनकी पेशानियाँ और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जायेंगी (और उनसे कहा जायेगा) कि ये वही (माल) है जो तुमने अपनी जानों के लिये जमाअ़ किया था सो तुम (आज उस माल का) मज़ा चख्खो जिसे तुम जमाअ़ करते थे।

(सू०-तौबा-9/34, 35)

मुसलमानो को माल जमाअ़ करने और उसके हुक़ूक़

अदा न करने और उसकी ज़कात अदा न करने वालों को इस आयत में दर्दनाक अ़ज़ाब की वईद सुनाई गई कि हर तरह के माल को जहन्नम की आग में तपाया जायेगा फिर उस तपे हुये माल से उनकी पेशानियाँ व कर‘वटें और पीठें दाग़ी जायेंगी जब तपा हुआ माल ठण्डा हो जायेगा तो फिर उसको दोबारा आग में तपाया जायेगा और वो क़यामत का दिन पचास हज़ार साल का होगा जिसमें उन्हें ये अ़ज़ाब मुसलसल मिलता रहेगा यानी पूरे पचास हज़ार साल तक उन्हें अ़ज़ाब मिलेगा और उनसे कहा जायेगा कि ये वही माल है जिसे तुम जमाअ़ करते थे और राहे खुदा में ख़र्च नहीं करते थे।

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि जब ये आयत नाज़िल हुई ‘‘जो लोग सोना और चाँदी जमाअ़ करके रखते हैं और उसमें से राहे खुदा में ख़र्च नहीं करते तो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुनादें जिस दिन उस (सोना चाँदी व माल) को दोज़ख़ की आग में तपाया जायेगा और फिर उस तपे हुये माल से उनकी पेशानियाँ और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जायेंगी (और उनसे कहा जायेगा) ये वही (माल) है जो तुमने अपनी जानों के लिये जमाअ़ किया था सो तुम (आज उस माल का) मज़ा चखो जिसे तुम जमाअ़ करते थे (सू०–तौबा–9/34,35)’’ तो उस वक़्त हम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ सफ़र में थे तो सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सोने और चांदी की मज़म्मत और उसका हाल हमें माअ़लूम हो गया लेकिन अगर हम जानते कि कौन सा माल बेहतर है तो हम उसी को जमाअ़ करते फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेहतर माल ज़िक्र करने वाली

ज़बान और शुक्र करने वाला दिल और नेक बीवी जो आदमी के ईमान व आख़िरत के कामों में मददगार हो यानी नेक बीवी की सुहबत के सबब आदमी में ताअ़त व इबादत का शौक बढ़े। (तिर्मिज़ी–2/971-ह०–3094)
(इब्ने माजा–सुनन–2/21–ह०-1856)
(कंजुल उ़म्माल–2/128-ह०–4312,4313)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/89–ह०-4430)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा में हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ौफ़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) का तिजारती काफ़िला आया तो उस काफ़िले में गन्दुम व आटे और खाने से लदे हुये सात सौ ऊँट थे तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) ने शोर सुना तो इस बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हें बताया गया कि अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ौफ़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) का तिजारती काफ़िला वापस आया है और उसमें गन्दुम, आटे और तुअ़ाम से लदे हुये सात सौ ऊँट है पस हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को इरशाद फ़रमाते हुये सुना है कि अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ौफ़ जन्नत में घिसटते हुये दाख़िल होंगे तो जब ये बात हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ौफ़ को मालूम हुई तो आपने उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से कहा ऐ मेरी माँ मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने तमाम ऊँटों को अपने साज़ो सामान के साथ अल्लाह की राह में सद्क़ा कर दिये। (इब्ने असीर–उसदुल ग़ाबा फ़ी माअ़रिफ़तुस्सहाबा–अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ौफ़–2/438)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो कोई सोने और चाँदी का मालिक है और वो उसकी ज़कात अदा नहीं करता तो रोज़े क़यामत उसका माल तख़्तियों की शक्ल में दोज़ख़ की आग में तपाया जायेगा फिर उस तपे हुये माल से उसकी पेशानी व उसकी पीठ और उसकी कर'वटों को दाग़ा जायेगा जब वो ठन्डी हो जायेंगी तो उन तख़्तियों को दोबारा गर्म किया जायेगा उस दिन ये अ़मल उसके साथ बराबर किया जायेगा हत्ता कि अल्लाह तआ़ला अपने सब बन्दों का फ़ैसला कर दे और उस दिन की मिक़्दार पचास हज़ार साल है और कोई भी उँटों वाला ऐसा नहीं जो अपने उँटों की ज़कात अदा नहीं करता मगर ये कि उसको एक हमवार ज़मीन पर औंधा करके लिटा दिया जायेगा और वो ऊँट अपने खुरों से उसको रौंधेंगे और जब उस पर आख़िरी ऊँट गुज़र जायेगा तो पहले वाला ऊँट आ जायेगा और दोबारा रौंधेंगा यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों का फ़ैसला करदे और कोई बकरियों वाला ऐसा नहीं जो उनकी ज़कात अदा नहीं करता हो मगर ये कि उसको एक हमवार ज़मीन पर औंधा करके लिटाया जायेगा और फिर वो बकरियाँ आयेंगी और वो अपने खुरों से उसको रौंधेंगी व सींगों से मारेंगी और जब उस पर आख़िरी बकरी गुज़र जायेगी तो पहले वाली बकरी आ जायेगी और दोबारा रौंधेंगी हत्ता कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों का फ़ैसला कर दे। (मुस्लिम–सहीह–3/21-ह०–2290)
(अबू दाऊद–सुनन–2/318-ह०–1658)
(बुख़ारी–सहीह–1/145-ह०–1402)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/375-ह०–617)
(नसाई–सुनन–2/120-ह०–2444)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और जो लोग उस (माल और दौलत) में से राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमाया वो हरगिज़ उस बुख़्ल को अपने हक़ में बेहतर ख़्याल न करें बल्कि ये उनके हक़ में बहुत बुरा है अ़नक़रीब रोज़े क़यामत उनके गले में उस माल का तौक़ पहनाया जायेगा जिसमें वो बुख़्ल करते हैं और अल्लाह तआ़ला ही आसमानों व ज़मीन का वारिस है और तुम जो भी अ़मल करते हो अल्लाह तआ़ला उससे बाख़बर है। (सू०–आले इमरान–3/180)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स मालदार हो और माल की ज़कात अदा न करे तो वो माल क़यामत के दिन एक गंजे सांप की शक्ल में उसके गले का तौक़ होगा और वो उससे भागेगा और वो साँप उसका पीछा करेगा फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये आयते करीमा तिलावत फ़रमाई और जो लोग उस (मालो दौलत) में से राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमाया वो हरगिज़ इस बुख़्ल को अपने हक़ में बेहतर ख़्याल न करें बल्कि ये उनके हक़ में बहुत बुरा है अ़नक़रीब रोज़े क़यामत उनके गले में उस माल का तौक़ पहनाया जायेगा जिसमें वो बुख़्ल करते हैं।
(सू०–आले इमरान–3/180)
(नसाई–सुनन–72/120-ह०–2445)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने ख़ज़ाना (माल) छोड़ा तो रोज़े कयामत वो माल गंजा सांप बनकर आयेगा जिसकी आँखों के ऊपर दो सियाह नुक़्ते होंगे माल का मालिक उससे भागेगा लेकिन वो सांप उसे पकड़ लेगा और कहेगा कि मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ जो तू अपने बाद वालों के लिये छोड़ आया था अल्लाह की क़सम वो उसका पीछा करता रहेगा यहाँ तक कि ख़ज़ाने का मालिक अपना हाथ लम्बा करेगा तो वो साँप उसे अपने मुहँ का लुक़्मा बना लेगा और उसके सारे जिस्म को चबायेगा।

(बुख़ारी–सहीह–6/321-ह०–6957)
(नसाई–सुनन–2/143-ह०–2485)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/660-ह०–1392)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो अपने माल की ज़कात नहीं देता वो माल रोज़े क़यामत अज़दहा (बड़ा सांप) बन जायेगा और अपने मालिक के पीछे दोड़ेगा जिधर को वो भागेगा वो सांप भी उसके पीछे भागेगा फिर उस से कहा जायेगा ये वही माल है जिसमें तू बुख़्ल करता था (यानी ज़कात, सद्क़ा ख़ैरात अदा नहीं करता था) फिर जब वो देखेगा ये अज़दहा मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा तो वो अज़दहे के मुँह में अपना हाथ डाल देगा फिर वो अज़दहा उसके हाथ को ऐसे चबा डालेगा जैसे ऊँट चबाता है। (मुस्लिम–सहीह–3/27-ह०–2297)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो ऊँट व बैल और

बकरियाँ रखता हो और उनकी ज़कात अदा न करे तो क़यामत के दिन वो एक चटयल मैदान में खड़ा किया जायेगा और उसको जानवर अपने खुरों और सीगों से मारेंगे जो मालदार अपनी दौलत की ज़कात अदा नहीं करेगा तो क़यामत के दिन वो दौलत एक गंजे साँप की शक्ल में आयेगी वो उसे देखकर भागेगा और वो गंजा सांप उसके पीछे पीछे कहता हुआ भागेगा कि मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ जिससे तू दुनिया में कंजूसी करता था जब वो शख़्स देखेगा कि भागने से अब कोई फ़ायदा नहीं तो वो मजबूर होकर अपना हाथ उस गंजे सांप के मुँह में डाल देगा और वो अजदहा (बड़ा सांप) उसके हाथ को चबायेगा। (नसाई–सुनन–2/133-ह०–2458)

अल्लाह तबारक व तअ़ाला के अ़ता कर्दा माल में लोग कंजूसी करते और उनकी ये कंजूसी उन्हें ज़कात सदक़ात और माल के हुक़ूक़ अदा करने से रोकती है और माल के शरअ़ई हुक़ूक़ अदा न करने और उनकी कंजूसी और माल की मुहब्बत और रग़बत और अपने माल की पूरी ज़कात अदा न करना उनके लिये सख़्त अ़ज़ाब का बाइस होगी और उनका माल उनके लिये आफ़त और वबाल होगा हालांकि उन पर वाजिब था कि जिस तरह से अल्लाह तअ़ाला ने उन पर एहसान किया तो उन्हें भी हाजत मंद फुक़रा व मसाकीन और ज़रुरत मंद अ़ज़ीज़ व अक़ारिब को माल देकर उनके साथ भलाई करना चाहिये था

**जैसा कि इरशादे बारी तअ़ाला है:–**

और तू उस दौलत में से जो अल्लाह तअ़ाला ने तुझे दे रखी है तू उससे आख़िरत का घर तलब कर और दुनिया से भी अपना हिस्सा न भूल और तू लोगों पर–

वैसा ही एहसान (और भलाई) कर जैसा कि एहसान अल्लाह ने तुझ पर किया है। (सू०-क़सस-28/77)

पस जिस शख़्स को ये यक़ीन हो जाये कि उसके पास जो कुछ भी है वो सब अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से है तो वो अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम को दूसरों तक पहुँचाने से कभी नहीं रुकेगा और ये फ़ेअ़ल उसे दुनिया से बेरग़बत कर देगा और उसकी आख़िरत के लिये ये फ़ेअ़ल बाइसे निजात होगा व उसके ईमान में इज़ाफ़े के बाइस बनेगा और उसे आफ़ात से महफ़ूज़ रखेगा जो लोग माल के शरअ़ई हुक़ूक़ अदा नहीं करते ज़कात व दीगर वाजिबात और सद्क़ात नहीं देते और अ़ज़ीज़ो अक़ारिब की हाजत पर ख़र्च नहीं करते और फ़ुक़रा व मसाकीन और मुहताजों को उनका हक़ नहीं देते उनका अन्जाम निहायत ही बुरा और वहशतनाक होगा क़यामत के दिन उनका माल गंजे सांप की शक्ल में उनके गले का तौक़ बनकर उन्हें डसेगा जिससे उन्हें सख़्त तकलीफ़ होगी और जो अपना माल राहे ख़ुदा में ख़र्च करते हैं तो सख़ावत के माल का नतीजा बेहतर और बुख़्ल के माल का अन्जाम आफ़त और वबाल है

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जानवरों का मालिक अगर उनका शरअ़ई हक़ अदा नहीं करेगा तो क़यामत के दिन वो जानवर उस पर मुसल्लत कर दिये जायेंगे और वो अपने खुरों से उसे नौचेंगे। (बुख़ारी-सहीह-6/322-ह०-6958)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स ऊँट, गाय

और बकरियाँ रखे और उनकी ज़कात अदा न करे तो रोज़े क़यामत वो जानवर खूब मोटे ताज़े होकर आयेंगे और अपने सींगों से अपने मालिक को मारेंगे व अपने क़दमों से रोंधेंगे जब आख़िरी जानवर गुज़र जायेगा तो फिर पहला जानवर आ जायेगा और इसी तरह होता रहेगा यहाँ तक कि लोग अपने अपने ठिकानों याअ़नी जन्नत व दोज़ख़ में पहुँच जायें।
(बुख़ारी–सहीह–1/145–ह०-1402)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/375–ह०-617)
(नसाई–सुनन–2/120–ह०-2444, 2460)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अपने माल की ज़कात अदा न करे तो क़यामत के दिन उस का माल एक गंजा साँप बनकर आयेगा जिसकी आँखों पर काले रंग के दो नुक्ते होंगे वो साँप उससे लिपट जायेगा और कहेगा मैं तेरा माल हूँ मैं तेरा खज़ाना हूँ।
(नसाई–सुनन–2/143–ह०-2485)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं जिस पर ज़कात फ़र्ज़ हो और वो ज़कात न दे तो मौत के वक़्त वो दुनिया में लौटने की आरज़ू करेगा तो एक शख़्स ने कहा ऐ इब्ने अ़ब्बास दुनिया में लौटने की आरज़ू तो कुफ़्फ़ार करेंगे तो हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया कि मैं तुम पर कुरान पढ़ता हूँ ‘ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल व तुम्हारी औलाद कहीं अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करदें और जो शख़्स ऐसा करेगा तो वही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं और तुम उस माल में से जो हमने तुम्हें अ़ता किया है (अल्लाह की

राह) में ख़र्च करो क़ब्ल इसके कि तुममें से किसी को मौत आ जाये फिर वो कहने लगे ऐ मेरे रब तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक की मुहलत क्यों न दी कि मैं सद्क़ा, ख़ैरात कर लेता और नेकोकारों में से हो जाता और अल्लाह तआ़ला हरगिज़ किसी भी शख़्स को मुहलत नहीं देता जब उसकी मौत का वक़्त आ जाता है और अल्लाह तआ़ला उन कामों से बाख़बर है जो तुम करते हो। (सूरह–मुनाफ़िकून–63/10,11)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/838–ह०-3316)

## राहे खुदा में माल ख़र्च न करने वालों की मज़म्मत

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और जब उनसे कहा जाता कि तुम उसमें से (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो जो तुम्हें अल्लाह ने अ़ता किया है तो काफ़िर लोग ईमान वालों से कहते हैं कि क्या हम उस (ग़रीब) शख़्स को खिलायें जिसे अगर अल्लाह तआ़ला चाहता तो (खुद ही) खिला देता तुम तो खुली गुमराही में मुब्तिला हो गये हो और वो कहते हैं कि ये वाअ़दा (क़यामत) कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो वो लोग सिर्फ़ एक चिंघाड़ के ही मुन्तज़िर हैं जो उन्हें (अचानक) पकड़ेगी और वो आपस में झगड़ रहे होंगे फिर वो न तो वसीयत करने के ही क़ाबिल रहेंगे और न अपने घर वालों की तरफ़ वापस पलट सकेंगे और (जिस वक़्त दोबारा) सूर फूँका जायेगा तो वो फ़ौरन क़ब्रों से निकलकर अपने रब की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे (रोज़े महशर की हौलनाकियाँ देखकर) कहेंगे हाय हमारी कम बख़्ती हमें किसने हमारी ख़्वाब गाहों से उठा दिया (ये ज़िन्दा होना) वही तो है कि जिसका खुदाए रहमान ने

वाअ़दा किया था और रसूलों ने सच कहा था ये महज़ एक बड़ी सख़्त चिंघाड़ होगी तो वो सबके सब यकायक हमारे हुज़ूर लाकर हाज़िर कर दिये जायेंगे फिर उस दिन किसी जान पर कोई जुल्म नहीं किया जायेगा और न तुम्हें कोई बदला दिया जायेगा सिवाए उन कामों के जो तुम किया करते थे। (सूरह–यासीन–36/47 ता 54)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**

याद रखो तुम वो लोग हो जिन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिये बुलाया जाता तो तुममें से बाअ़ज़ ऐसे भी हैं जो बुख़्ल करते हैं और जो कोई भी बुख़्ल करता है वो महज़ अपनी जान ही से बुख़्ल करता है और अल्लाह बेनियाज़ है और तुम सब मोहताज़ हो। (सूरह–मुहम्मद–47/38)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**

पस तुम अल्लाह से डरते रहो (व) जिस क़दर हो सके (उसके अहकाम) सुनो और इताअ़त करो और (उसकी राह में) ख़र्च करो ये तुम्हारे लिये बेहतर है और जो अपने नफ़्स के बुख़्ल से बचा लिया जाये सो वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (सूरह–तग़ाबुन–64/16)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**

और जिसने बुख़्ल किया और (राहे हक़ में माल ख़र्च करने से) बे परवाह रहा व उसने अच्छाई को झुटलाया तो हम अ़नक़रीब उसे सख़्ती (यानी अ़ज़ाब की तरफ़ बढ़ने) के लिये सहूलत फ़राहम कर देंगे और उसका माल उसके किसी काम नहीं आयेगा जब वो हलाकत (के गढ़े) में गिरेगा।
(सूरह–लैल–92/8 ता 11)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

तुम हरगिज़ नेकी को नहीं पहुँच सकोगे जब तक तुम अपनी महबूब चीज़ों में से (अल्लाह की राह में) ख़र्च न करो और तुम जो कुछ भी ख़र्च करते हो अल्लाह तआ़ला उसे खूब जानने वाला है।

(सूरह-आले इमरान-3/92)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

जो (लोग) ज़कात अदा नहीं करते उनका हाल ये है कि वो आख़िरत के भी मुनकिर हैं।

(सूरह-फुस्सिलत/हामीम सज्दा-41/07)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

और जो लोग उस (माल और दौलत) में से राहे खुदा में ख़र्च करने से बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमाया वो हरगिज़ उस बुख़्ल को अपने हक़ में बेहतर ख़्याल न करें बल्कि ये उनके हक़ में बहुत बुरा है अ़नक़रीब रोज़े क़यामत उनके गले में उस माल का तौक़ पहनाया जायेगा जिसमें वो बुख़्ल करते हैं और अल्लाह तआ़ला ही आसमानों व ज़मीन का वारिस है और तुम जो भी अ़मल करते हो अल्लाह तआ़ला उससे बाख़बर है।

(सू०-आले इमरान-3/180)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने आप को हिर्स और बुख़्ल से बचाओ क्योंकि तुमसे पहले के लोग इसी वजह से हलाक हुये।

(अबू दाऊद-सुनन-2/343-ह०-1698)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम जुल्म करने से बचो क्योंकि क़यामत के दिन ज़ालिम के लिये तारीकियाँ (अंधेरे ही अंधेरे) हैं और तुम बख़ीली से बचो क्योंकि बख़ीली ने तुम से पहले लोगों को तबाह किया है बख़ीली की वजह से उन्होंने क़त्ल किये और हराम माल को हलाल किया।
(मुस्लिम–सहीह–5/55–ह०-6576)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/235–ह०-491)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बुख़्ल की आ़दत से बचो क्योंकि तुमसे पहली क़ौमों को इसी ने हलाक किया था उन्होंने क़त्ल व ग़ारत की थी यहाँ का जुल्म क़यामत में अंधेरा बन जायेगा।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/230–ह०-476)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मोमिन भोला भाला और सख़ी होता है और फ़ाजिर फ़रेबी और बख़ील होता है। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1052–ह०-1964)

## बुख़्ल और ईमान बन्दे के दिल में जमाअ़ नहीं हो सकते

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

वसल्लम) ने फ़रमाया कि बुख़्ल और ईमान किसी बन्दे के दिल में इकट्ठा नहीं हो सकते इसी तरह से किसी मुसलमान के दिल में हसद व ईमान इकट्ठा नहीं हो सकते। (नसाई–सुनन–2/340–ह०-3115)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की ख़ातिर जिहाद में उड़ने वाला गुबार और जहन्नम का धुआँ बन्दे में जमाअ़ नहीं हो सकते यूँ ही कंजूसी और ईमान बन्दे में कभी जमाअ़ नहीं होंगे।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/162–ह०-284)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दो ख़सलतें मोमिन में कभी जमाअ़ नहीं हो सकती एक बुख़्ल और दूसरी बद खुल्क़ी। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1052–ह०-1962)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/162–ह०-285)

## –: बख़ील जन्नत में नहीं जायेगा :–

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि फ़रेब करने वाला और बख़ील (कंजूस) और एहसान रखने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1052–ह०-1963)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने जन्नत को अपने दस्ते कुदरत से पैदा फ़रमाया उसमें फल और नहरें जारी कीं फिर अल्लाह तआ़ला ने उसकी तरफ़ देखा और फ़रमाया कि तू मुझसे गुफ़्तगू कर उसने कहा 'बेशक मोमिन कामयाब हो गये' (सूरह–मुमिनून–23/01) फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया मुझे मेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम तेरे अन्दर कोई बख़ील नहीं जायेगा। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/306–ह०-5518)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सख़ी अल्लाह के क़रीब और जन्नत के क़रीब है और दोज़ख़ से दूर है और बख़ील (कंजूस) अल्लाह तआ़ला से दूर है और दोज़ख़ के क़रीब है और अल्लाह तआ़ला को जाहिल सख़ी प्यारा है आ़बिद बख़ील से।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1051–ह०-1961)

## राहे खुदा में माल ख़र्च न करने वालों को फ़रिश्तों की बद्दुआ़

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर रोज़ फ़रिश्ते नाज़िल होकर दुआ़ करते हैं ऐ अल्लाह ख़र्च करने वालों को उसका बदला अ़ता फ़रमां और ख़र्च न करने वालों के माल को ज़ाए कर दे। (बुख़ारी–सहीह–2/170-ह०–1442)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस वक़्त बन्दे सुबह करते हैं तो दो फ़रिश्ते उतरते हैं उनमें से एक ये कहता है कि राहे खुदा में ख़र्च करने वालों को ऐ अल्लाह और ज़्यादा अ़ता फ़रमां और दूसरा ये कहता है कि बख़ील (कंजूस) को तबाह करदे। (मुस्लिम–3/43–ह०-2336)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहीं तुलूअ़ होता हरगिज़ किसी भी दिन का सूरज मगर उसके दोंनों पहलुओं के साथ दो फ़रिश्ते भेजे जाते हैं वो दोंनों फ़रिश्ते ऐलान करते हैं कि ऐ लोगो तुम अपने रब की इताअ़त की तरफ़ आ जाओ बेशक जो चीज़ क़लील हो और किफ़ायत करे वो उस चीज़ से बेहतर होती है जो तुम्हें ग़ाफ़िल करदे और गुरुब नहीं होता सूरज हरगिज़ मगर उसके दोंनों तरफ़ दो फ़रिश्ते भेजे जाते हैं जो ऐअ़लान करते हैं और वो दुआ़ करते हैं कि अल्लाह की राह में ख़र्च करने वालों को मज़ीद अ़ता फ़रमां और रोककर रखने वालों का माल ज़ाए करदे।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/267–ह०-10373)

➡ हज़रत उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इब्ने आदम अगर तू ख़र्च करे तो ये तेरे लिये बेहतर है और अगर तू बुख़्ल करे तो तेरे लिये बदतर है और अपने अह्ल व अ़याल से इब्तिदा कर और ऊपर वाला हाथ तेरे नीचे वाले हाथ से बेहतर है ऊपर वाला हाथ ख़र्च करने वाला होता है और नीचे वाला हाथ मांगने वाला होता है।
(मुस्लिम–सहीह–2/375-ह०–2388)

➡ हज़रत क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते है कि हज़रत सुलेमान अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब तुम सेर हो तो भूके को याद करो और जब तुम ग़नी हो तो फ़ुक़रा को याद करो।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/186-ह०–3393)

## –: ज़कात किसे दी जाये :–

**इरशादे बारी तआ़ला है:–**
बेशक सद्क़ात (ज़कात) महज़ ग़रीबों और मुहताजों व उनकी वसूली पर मुक़र्रर किये गये कारकुनों और ऐसे लोगों के लिये है जिनके दिलों में इस्लाम की उल्फ़त पैदा करना मक़सूद हो और (मज़ीद ये कि) इन्सानी गर्दनों को (गुलामी की ज़िन्दगी से) अज़ाद कराने में व क़र्ज़दारों के बोझ उतारने में और अल्लाह तआ़ला की राह में और मुसाफ़िरों पर (ज़कात का ख़र्च किया जाना हक़ है) ये (सब) अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से फ़र्ज़ किया गया है और अल्लाह तआ़ला खूब जानने वाला बड़ी हिकमत वाला है। (सूरह–तौबा–9/60)

मज़कूरा आयत में सदक़ात से मुराद ज़कात है और ज़कात की कई क़िस्में हैं मसलन सोना चाँदी और माले तिजारत और रुपया पैसा और जानवरों और पैदावार वग़ैराह और इसके अ़लावा सद्क़ाते वाजिबा में फ़ितराह, नज़र और कफ़्फ़ारा वग़ैराह शामिल है इसलिये मज़कूरा आयते करीमा में सद्क़ात जमाअ़ इरशाद हुई जिसमें ज़कात व सदक़ाते वाजिबा की तमाम क़िस्में शामिल हैं ज़कात के मुस्तहिक़ सिर्फ़ यही आठ क़िस्म के लोग हैं और इनके सिवा कोई भी मुस्तहिक़ नहीं है और ज़कात अदा करने के मुआ़मले में कुरान में अल्लाह तआ़ला–

का ये सरीह और वाज़ेह हुक्म है अल्लाह तआ़ला ने इन्हीं आठ क़िस्म के लोगों के लिये ज़कात को मुख़्तस फ़रमाया है।

हर क़िस्म की ज़कात ख़्वाह सोना चाँदी या माले तिजारत, रुपया पैसा या जानवरों या ज़मीन की पैदावार या हर क़िस्म के वाजिब सद्क़े ख़्वाह नज़र के सद्क़े या फ़ित्राह या कफ़्फ़ारा वग़ैराह ये उन फ़क़ीरों का हक़ है जिनके पास निसाब से कम माल हो और उन मिस्कीनों का हक़ है जिनके पास कुछ भी न हो और उन लोगों का कि जो ज़कात वसूल करके हाकिमे इस्लाम के पास पहुँचायें अगरचा खुद ग़नी हों तो उन्हें उनकी मेहनतो मशक्क़्त के मुताबिक़ दिया जायेगा और उन लोगों का जिनके दिलों को इस्लाम की तरफ़ माइल करना व उनमें इस्लाम की उल्फ़त पैदा करना मक़सूद हो और गुलामों को आज़ादी दिलाने में सर्फ़ की जाये और जाइज़ तौर पर क़र्जदार हो जाने वालों का क़र्ज़ उतारने में सर्फ़ की जाये राहे खुदा में ख़र्च की जाये मसलन जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह करने वालों पर ख़र्च की जाये और मुसाफ़िरों पर ख़र्च की जाये जो सफ़र में हाजत मंद हों ख़्वाह वो अपने घर में मालदार हों।

इनके अ़लावा किसी को ज़कात देना जाइज़ नहीं और किसी मदरसे के कारकुनों व मुदर्रिसीन को ज़कात देना नाजाइज़, हराम व कुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ है मुफ़्ती अहमद यार ख़ान तफ़्सीर नईमी में फ़रमाते हैं ज़कात लेने वाले को मालिक कर देना ज़रुरी है बग़ैर मालिक किये ज़कात अदा न होगी ज़कात के माल को मस्जिद व मदरसा और क़ब्रिस्तान और ख़ानकाह की ताअ़मीर में ख़र्च करना नाजाइज़ है। (तफ़्सीर नईमी–10/369)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल को यमन की तरफ़ भेजा तो उन से फ़रमाया जब तुम्हारा गुज़र अहले किताब (यहूद व नसारा) पर हो तो उनसे कहना कि गवाही दो अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं जब वो तेरा कहना मानलें तो उनसे कहना तुम पर अल्लाह तआ़ला ने पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं फिर जब वो ये मान लें तो तुम उनसे कहना कि अल्लाह तआ़ला ने तुम पर ज़कात फ़र्ज़ की हैं जो मालदारों से लेकर फुक़रा को दी जाती है। (बुख़ारी–सहीह–2/200–ह०-1496)
(नसाई–सुनन–2/117–ह०-2439)

## –: सद्क़ात ख़ैरात के मुस्तहक़ीन :–

**इरशादे बारी तआ़ला है:–**
ख़ैरात उन फुक़रा का हक़ है जो अल्लाह की राह में (कस्बे मआ़श से) रोक दिये गये हैं वो (उमूरे दीन में हमा वक़्त मशगूल रहने के बाइस) ज़मीन में चल फिर भी नहीं सकते उनके (ज़ुहदन) तमाअ़ के बाज़ रहने के बाइस नादान (जो उनके हाल से बेख़बर हैं वो) उन्हें मालदार समझे हुये हैं तुम उन्हें उनकी सूरत से पहचान लोगे (और) वो लोगों से बिल्कुल सुवाल ही नहीं करते कि कहीं (मख़लूक़ के सामने) गिड़गिड़ाना न पड़े और तुम जो माल भी ख़र्च करोगे तो बेशक अल्लाह तआ़ला उसे खूब जानता है। (सूरह–बक़राह–2/273)

ये आयते करीमा अहले सुफ़्फ़ा के हक़ में नाज़िल हुई

इन हज़रात की ताअ़दाद 400 के क़रीब थी ये हिजरत करके मदीना तय्यबा में मस्जिदे नबवी के पास एक चबूतरा था जहाँ पर ये रहते थे जिन्हें असहाबे सुफ़्फ़ा कहते हैं यहाँ न उनका मकान था ना कुम्बा न कबीला और न ही इन हज़रात ने शादी की थी और न इनका कोई कारोबार था इनमें से सत्तर के क़रीब अफ़राद के पास जिस्म ढकने के लिये पूरा कपड़ा भी नहीं था इन के तमाम औक़ात अल्लाह तआ़ला की इ़बादत में सर्फ़ होते थे ये रात में ज़िक्रे इलाही व कुरान का सीखना और दिन में इ़बादात और जिहाद के कामों में मशगूल रहते थे जिसकी वजह से इन्हें रोज़ी कमाने की फुरसत नहीं थी कि बाज़ार में चल फिरकर रोज़ी कमायें।

ये लोग गुरबत व भूक प्यास के बावुजूद लोगों से कभी सुवाल नहीं करते थे और हमेशा अपने फ़क़्र को छुपाने की कोशिश करते थे जिसकी वजह से लोग ये समझते थे कि उनका गुज़ारा बहुत ही अच्छा हो रहा है लेकिन उनका हक़ीक़ते हाल इससे बरअ़क्स था और उनकी दुनियावी ज़िन्दगी मशक़्क़तों व तकलीफ़ों से माअ़मूर थी और वो अपनी इस हालत में भी सब्र पर साबित क़दम रहते थे और इन असहाबे सुफ़्फ़ा में बाअ़ज़ ऐसे थे जो भूक की वजह से नमाज़ में गिर जाते थे और ये राहे खुदा में कामिल मुक़ीद थे और ये दीन की ख़िदमत में हमा वक़्त मशगूल रहते थे इनको कुदरती अ़लामात से ही पहचाना जा सकता था और इनके चेहरों पर फ़ाक़ा के आसार और आवाज़ में कमज़ोरी और रफ़्तार में जुअ़फ़ इनके फ़क़्र व फ़ाक़ा का पता देते थे।

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर करके दो तो ये भी अच्छा है

(इससे दूसरों को तरग़ीब होगी) और अगर तुम उन्हें मख़्फ़ी रखो और मुहताजों को पहुँचा दो तो ये तुम्हारे लिये और बेहतर है और अल्लाह तआ़ला (उस ख़ैरात की वजह से) तुम्हारे कुछ गुनाहों को तुम से दूर फ़रमां देगा और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आअ़माल से बाख़बर है। (सूरह–बक़राह–2/271)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
नेकी सिर्फ़ यही नहीं कि तुम अपने मुँह मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ फेर लो बल्कि असल नेकी तो ये है कि कोई शख़्स अल्लाह पर व योमे क़यामत पर और फ़रिश्तों पर और (अल्लाह की) किताब और पैग़म्बरों पर ईमान लाये और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में अपना माल क़राबत दारों पर और यतीमों पर और मुहताजों पर और मुसाफ़िरों पर और माँगने वालों पर और (गुलामों की) गर्दनों (को आज़ाद कराने) में ख़र्च करे और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात दे।
(सूरह–बक़राह–2/177)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
आप से पूछते हैं कि (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करें फ़रमादें जिस क़दर भी माल ख़र्च करो (दुरस्त है) मगर उसके हक़दार तुम्हारे माँ बाप हैं और क़रीबी रिश्तेदार और यतीम हैं और मुहताज हैं और मुसाफ़िर हैं और जो नेकी तुम करते हो बेशक अल्लाह तआ़ला उसे खूब जानने वाला है। (सूरह–बक़राह–2/215)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
क़राबत दारों को उनका हक़ अदा करो और मुहताजों (का हक़ अदा करो) और मुसाफ़िरों को भी (दो) और

(अपना माल) फ़िज़ूल ख़र्ची में न उड़ाओ बेशक फ़िज़ूल ख़र्ची वाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा ही ना शुक्रा है। (सूरह–बनी इसराईल–17/26, 27)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
पस आप क़राबत दारों को उनका हक़ अदा करते रहें और मुहताज व मुसाफ़िर को (उनका हक़ अदा करते रहें) ये उन लोगों के लिये बेहतर है जो अल्लाह की रज़ामन्दी के तालिब हैं और वही लोग मुराद पाने वाले हैं। (सूरह–रुम–30/38)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
बेशक अल्लाह (हर एक के साथ) अ़द्ल व एहसान का हुक्म फ़रमाता है और क़राबत दारों को देते रहने का और बेहयाई और बुरे कामों व सरकशी व नाफ़रमानी से मना फ़रमाता है वो तुम्हें नसीहत फ़रमाता है ताकि तुम खूब याद रखो। (सूरह–नह्ल–16/90)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ‌उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि जो कुछ एक इन्सान सवाब की नियत से अपनी ज़ात और अह्ल व अ़याल पर ख़र्च करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे उसका अज्र देता है लिहाज़ा अपने अह्लो अ़याल पर ख़र्च किया करो और अगर कुछ बच रहे तो किसी क़रीबी रिश्तेदार को दो। (इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/77–ह०-63)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि यक़ीनन ये माल शादाब व शीरीं है और ये उस मुसलमान का बेहतर–

साथी है जिसने उसमें से मिस्कीन यतीम और मुसाफ़िर को दिया। (मुस्लिम–सहीह–2/387–ह०-2423) (नसाई–सुनन–4/338–ह०-2582)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेहतरीन सद्क़ा वो है जो सद्क़ा देने वाले को मुफ़लिस न बनाये और सद्क़े का आगाज़ उनसे करो जिनके नान व नफ़क़े के तुम ज़िम्मेदार हो यानी सबसे पहले अपने अह्ल अ़याल या जिनके तुम कफ़ील हो उनकी ज़रुरियात पर ख़र्च करो और बेहतर है ऊपर वाला हाथ नीचे के हाथ से क्योंकि ऊपर वाला हाथ ख़र्च करने वाला होता है और नीचे वाला का हाथ माँगने वाला है। (अबू दाऊद–सुनन–2/330–ह०-1676) (मुस्लिम–सहीह–2/373–ह०-2386) (बुख़ारी–सहीह–2/160–ह०-1427) (नसाई–सुनन–4/302–ह०-2534)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सद्क़ा मिस्कीन को देना फ़क़त सदक़ा है यानी एक सवाब है और सद्क़ा क़राबत दारों को देना दो सवाब रखता है एक सद्क़े का और दूसरा सिला रहमी का। (इब्ने माजा–सुनन–1/624–ह०-1844) (तिर्मिज़ी–सुनन–1/396–ह०-658) (अबू दाऊद–सुनन–2/798–ह०-2355) (हाकिम–अल मुस्तदरक–2/47–ह०-1477)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) रिवायत है कि मैं मस्जिदे नबवी में था तो मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम)

को फ़रमाते हुये सुना कि ऐ औ़रतो तुम सद्क़ा करो अगरचा ज़ेवरात से ही क्यों न हो हज़रत ज़ैनब (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) अपने ख़ाविन्द अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द और उन बच्चों पर ख़र्च करतीं थीं जो उनकी पर'वरिश में थे तो उन्होंने अपने शौहर से कहा आप रसूलुल्लाह से दरयाफ़्त करें क्या मेरा ये ख़र्च करना सद्क़े में काफ़ी होगा कि मैं तुम पर और इन यतीम बच्चों पर खर्च करती हूँ जो मेरी पर'वरिश में हैं तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द ने कहा तुम खुद ही रसूलुल्लाह से दरयाफ़्त करलो तो आपने रसूलुल्लाह से सारी बात अ़र्ज़ की तो आपने फ़रमाया कि ज़ैनब को दोहरा अज्र मिलेगा एक सद्क़े का सवाब दूसरा सिला रहमी का सवाब। (हज़रत ज़ैनब दस्तकारी में महारत रखतीं थीं) (बुख़ारी–सहीह–2/184–ह०-1466)
(मुस्लिम–सहीह–3/38–ह०-2318)
(इब्ने माजा–सुनन–1/621–ह०-1834)

## –: अफ्ज़ल सदक़ा :–

➡ हज़रत सुराक़ा बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े सद्क़े के बारे में तुम्हारी रहनुमाई न करूँ तो अ़र्ज़ किया गया ज़रुर बतायें तो आपने फ़रमाया कि तेरे लिये सबसे बड़ा सद्क़ा तेरी वो बेटी है जो शौहर के फ़ौत हो जाने या तलाक़ होने की वजह से वापस तेरे पास आ गई हो और तेरे सिवा उसका कोई सहारा न हो तो तुम उसका सहारा बनो।
(इब्ने माजा–सुनन–3/181–ह०-3667)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/853–ह०-7345)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) से अर्ज़ किया गया कि कौन सा सद्का अफ्ज़ल है आपने फ्रमाया जो कम माल वाला मेहनत करके सद्का दे वो सद्का अफ्ज़ल है।
(अबू दाऊद–सुनन–2/331–ह०-1677, 1449)
(नसाई–सुनन–2/151–ह०-2530)

## –: साइल के साथ अच्छा बरताव करना :–

**इरशादे बारी तआला है:–**
(साइल से) नरमी के साथ गुफ्तगू करना और दरगुज़र करना उस सद्के से बेहतर है कि जिसके बाअद (उस की) दिल आज़ारी हो और अल्लाह तआला बेनियाज़ है बड़ा हिल्म वाला है। (सूरह–बक्राह–2/263)

**इरशादे बारी तआला है:–**
और (अपने दर के) किसी माँगने वाले को न झिड़कें और अपने रब की नेअमतों को (खूब) तज़किरा करें।
(सूरह–दुहा–93/10)

**इरशादे बारी तआला है:–**
अगर तुम (अपनी तंगदस्ती के बाइस) उन मुस्तहकीन (याअनी हाजत मंद रिश्तेदारों, फ्कीरों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों) से गुरेज़ करना चाहते हो इस बिना पर कि अपने रब की तरफ़ से रहमत (खुशहाली) के इन्तिज़ार में कि जिसकी तुम तवक्क़ो रखते हो तो उनसे उम्दगी व नरमी से जवाब दे दिया करो और न अपना हाथ अपनी गर्दन से बाँधा हुआ रखो (कि किसी को कुछ न दो) और ना ही उसे सारा का सारा खोल दो (कि सब

कुछ दे डालो) कि फिर तुम्हें खुद मलामत ज़दा (और) थका हारा बनकर बैठना पड़े बेशक आपका रब जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ कुशादा फ़रमां देता है और (जिस के लिये चाहता है रिज़्क़) तंग कर देता है बेशक वो अपने बन्दों (के आअ़माल व अहवाल) की खूब ख़बर रखने वाला खूब देखने वाला है (सू०-इसरा-17/28-30)

## जो अल्लाह के वास्ते से माँगे उसे कुछ न कुछ ज़रुर दो

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह के वास्ते पनाह माँगे उसे अमान दो और जो शख़्स अल्लाह के नाम से सुवाल करे उसको ज़रुर दो और जो शख़्स तुम्हारी दाअ़वत करे तो उसकी दाअ़वत को कुबूल करो और जो तुम्हारे साथ एहसान करे तो उसका बदला दो अगर बदला देने के लिये कोई चीज़ न पाओ तो उसके हक़ में दुआ़ करो यहाँ तक कि तुम समझ लो कि उसके एहसान का बदला दे दिया है।
(अबू दाऊद-सुनन-2/328-ह०-1672)
(अबू दाऊद-सुनन-2/822-ह०-5109)
(नसाई-सुनन-2/168-ह०-2571)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो तुमसे अल्लाह के नाम से पनाह माँगे उसे पनाह दो और जो तुमसे अल्लाह के वास्ते से माँगे उसको ज़रुर दो।
(अबू दाऊद-सुनन-2/821-ह०-5108)

इसमें तर्ग़ीब ये है कि माँगने वाले ने जिस अ़ज़ीम ज़ात के वास्ते से माँगा है तो उसके नाम का लिहाज़ करते हुये जो कुछ हो सके उसे ज़रुर दो

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने दुआ़ की ऐ अल्लाह ज़िन्दा रख मुझे मिस्कीन और मिस्कीन की हालत में मौत दे और क़यामत के दिन उठा मुझे मिस्कीनों की जमाअ़त से सो आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ऐसा क्यों तो आपने फ़रमाया कि मसाकीन मालदारों से पाँच सौ साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे नीज़ फ़रमाया कि ऐ आयशा मसाकीन को मत लौटा और उसे कुछ न कुछ ज़रुर दे अगरचा एक खजूर ही हो और ऐ आयशा मसाकीन को दोस्त रख और उनसे नज़दीक हो कि बेशक रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला तुझे नज़दीक करेगा याअ़नी अपनी बारगाह में तुझे अ़ज़ीम मरातिब इनायत फ़रमायेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/203–ह०-2352)
(इब्ने माजा–सुनन–3/354–ह०-4126)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/302–ह०-10507)

➡ हज़रत इब्ने बुजैद अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि माँगने वाले को कुछ सद्क़ा देकर रुख़सत करो चाहे जला हुआ खुर ही क्यों न हो। (नसाई–सुनन–2/168–ह०-2569)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तबारक व तआ़ाला के नज़दीक सबसे बदतरीन शख़्स वो है कि जिससे अल्लाह तआ़ाला का वास्ता देकर कुछ माँगा जाये और फिर भी वो न दे तो ऐसा शख़्स सबसे बदतरीन शख़्स है। (नसाई–सुनन–2/169–ह०-2573)

## अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने की तर्ग़ीब

**इरशादे बारी तआ़ाला है:–**
ऐ ईमान वालो जो कुछ हमने तुम्हें अ़ता किया है उसमें से (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो क़ब्ल इसके कि वो दिन आ जाये कि जिसमें कोई ख़रीद, फ़रोख़्त न होगी (सूरह–बक़राह–2/254)

**इरशादे बारी तआ़ाला है:–**
और आपसे पूछते हैं कि (राहे खुदा में) क्या ख़र्च करें तो आप उनसे फ़रमांदें जो कुछ भी ज़रुरत से ज़ायद हो। (सूरह–बक़राह–2/219)

**इरशादे बारी तआ़ाला है:–**
ऐ ईमान वालो उन पाकीज़ा कमाइयों में से और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला है (अल्लाह की राह में) ख़र्च किया करो और उसमें से गन्दे माल को (अल्लाह की राह में) ख़र्च करने का इरादा न करो कि तुम खुद उसे हरगिज़ न लो (सूरह–बक़राह–2/267)

**इरशादे बारी तआ़ाला है:–**
अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने ही हाथों से खुद को हलाकत में न डालो और नेकी इख़्तियार करो

बेशक अल्लाह तआ़ला नेकोकरों से मुहब्बत फ़रमाता है (सूरह–बक़राह–2/195)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

ज़ईफ़ों (कमज़ोरों) पर कोई गुनाह नहीं और न बीमारों पर और न ही ऐसे लोगों पर जिनके पास ख़र्च करने के लिये कुछ भी नहीं है कि जिसे (राहे खुदा में) ख़र्च करें बशर्ते ये कि वो अल्लाह और उसके रसूल की ख़ैर ख़्वाही करते रहें तो ऐसे नेकोकारों पर इल्ज़ाम की कोई राह नहीं है और अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (सूरह–तौबा–9/91)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि जब ये आयत उतरी 'तुम हरगिज़ नेकी को नहीं पहुँच सकोगे जब तक तुम राहे खुदा में अपनी महबूब चीज़ों में से ख़र्च न करोगे' तो अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने कहा कि हम देखते हैं कि हमें पालने वाला हमें रिज़्क़ देने वाला मेरे माल को तलब फ़रमाता सो मैं आपको या रसूलल्लाह गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने बाग़ को अल्लाह तआ़ला की नज़र किया याअ़नी अल्लाह की राह में दे दिया सो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने ज़रुरत मंद क़राबत दारों यानी रिश्तेदारों को दे दो तो उन्होंने हज़रत हस्सान और उबई बिन काअ़ब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) को दे दिया। (मुस्लिम–सहीह–3/38–ह०-2316)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला

फ़रमाता है ऐ इब्ने आदम तू (राहे हक़) में ख़र्च कर मैं तुझ पर खर्च करूँगा (बुख़ारी–सहीह–5/272–ह०-5352) (मुस्लिम–सहीह–3/34–ह०-2308)

➡ हज़रत अ़दी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जहन्नम का ज़िक्र फ़रमाया और उससे पनाह माँगी और तीन बार मुँह फेरा और फिर फ़रमाया कि तुम जहन्नम की आग से बचो अगरचा खजूर का एक टुकड़ा देकर हो और अगर तुम्हें वो भी न मिले तो अच्छी बात कहकर।
(मुस्लिम–सहीह–3/47–ह०-2350)
(नसाई–सुनन–2/162–ह०-2556)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है उन्होंने कहा कि हमें सद्क़ा करने का हुक्म दिया गया और हम बोझ उठाकर मज़दूरी किया करते थे और सद्क़ा दिया अबू अकील ने आधा साअ़ और एक शख़्स ने उनसे कुछ ज़्यादा दिया तो मुनाफ़िक़ीन ने कहा कि बेशक अल्लाह इस सद्क़े से बे पर'वाह है और दूसरे ने तो सिर्फ़ दिखाने के लिये ही सद्क़ा दिया है फिर ये आयत उतरी ''जो लोग उन मुसलमानों पर तअ़ना ज़नी करते हैं जो दिल खोलकर ख़ैरात करते हैं और उन (ग़रीब मुसलमानों) पर (ऐ़ब लगाते हैं) जिनके पास सिवाए अपनी मेहनत मज़दूरी के और कुछ मयस्सर नहीं तो ये उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन्हें उनके मज़ाक़ की सज़ा देगा और उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है'।
(सूरह–तौबा–9/79)
(मुस्लिम–सहीह–2/360–ह०-2355)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर कोई सुबह को जाकर लकड़ी का एक गट्ठा अपनी पीठ पर लादे और उससे सद्क़ा दे और अपना काम भी निकाले कि लोगों का मोहताज भी न हो तो ये उसके लिये उससे बेहतर है कि लोगों से माँगता फिरे कि वो दें या न दें और बिला शुबा ऊपर का हाथ अफ़ज़ल है नीचे वाले हाथ से और पहले सद्क़ा उसको दे जो तेरी कफ़ालत में हैं। (मुस्लिम–सहीह–3/63–ह०-2400)
(नसाई–सुनन–2/177–ह०-2588)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ इब्ने आदम जो चीज़ ज़रुरत से ज़्यादा हो उसे राहे ख़ुदा में ख़र्च करते रहो ये तेरे लिये बेहतर है और सद्क़ा पहले उसको दो जो तेरी कफ़ालत में हैं और ऊपर का हाथ अफ़ज़ल है नीचे वाले हाथ से। (मुस्लिम–सहीह–3/60–ह०-2388)
(नसाई–सुनन–2/154–ह०-2336)

➡ हज़रत समुराह बिन जुन्दुब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हमें हुक्म फ़रमाया कि जो माल हम तिजारत के लिये तैयार करें तो उस माल से सद्क़ा दिया करें। (अबू दाऊद–2/232–ह०-1562)

➡ हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) बयान फ़रमाती हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरे पास बस वही होता है कि जो मेरे

शौहर जुबैर घर में ले आयें तो क्या मैं उसमें से सद्क़ा दे दिया करूँ तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाया कि ऐ अस्मा ज़रुर दो और बाँध बाँध कर न रखो वरना तुम पर भी तुम्हारा रिज़्क़ बाँध दिया जायेगा (नसाई-सुनन-2/161-ह०-2555) (अबू दाऊद-सुनन-2/343-ह०-1699)

➡उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ आयशा दो और गिनो नहीं वरना तुम्हें भी गिन गिन कर दिया जायेगा। (अबू दाऊद-सुनन-2/344-ह०-1700)

➡हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेहतरीन दीनार वो है जिसे कोई अपने अह्ल व अ़याल पर ख़र्च करता है और बेहतरीन दीनार वो है जिसे कोई अल्लाह तआ़ाला की राह में ख़र्च करता है और बेहतरीन दीनार वो है जिसे कोई अल्लाह तआ़ाला की राह में अपने साथियों पर ख़र्च करता है। (मुस्लिम-सहीह-2/341-ह०-2310)
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/1053-ह०-1966)
(इब्ने माजा-सुनन-2/348-ह०-2760)

## -: ज़कात से माल पाक होता है :-

**इरशादे बारी तआ़ाला हैः-**

(ऐ नबी) आप उनके अमवाल में से सद्क़ा (ज़कात) वसूल कीजिये कि आप उस (सद्क़े) के बाइस उन्हें (गुनाहों से) पाक फ़रमांदें और उन्हें (ईमान व माल की

पाकीज़गी से) बरकत बख़्श दें और उनके हक़ में दुआ फ़रमायें बेशक आपकी दुआ उनके लिये बाइसे तस्कीन है और अल्लाह तआला खूब सुनने वाला खूब जानने वाला है। (सूरह–तौबा–9/103)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) से एक शख़्स ने अर्ज की या रसूलल्लाह उस शख़्स के बारे में आपका क्या ख़्याल है जो अपने माल की ज़कात अदा करता है आपने फ़रमाया कि जिसने अपने माल की ज़कात अदा कर दी उससे उसके माल का शर चला जाता है।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/547–ह०-1439)
(तबरानी–मुअजम औसत–2/161–ह०-1579)
(इब्ने अबी शैबा–2/353–ह०-9830)
(इब्ने खुज़ैमा–सहीह–4/88–ह०-2258)

**इरशादे बारी तआला हैः–**

ऐ ईमान वालो उन पाकीज़ा कमाइयों में से और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला है (अल्लाह की राह में) ख़र्च किया करो और उसमें से गन्दे माल को (अल्लाह की राह में) ख़र्च करने का इरादा न करो कि तुम खुद उसे हरगिज़ न लो (सूरह–बक़राह–2/267)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ख़्यानत के माल से दिया हुआ सद्क़ा कुबूल नहीं फ़रमाता।

(अबू दाऊद–सुनन–1/130–ह०-59)
(नसाई–सुनन–2/150–ह०-2528)

# राहे खुदा में ख़र्च करने वाले नेकोकारों का सिला जन्नत है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़ाबिले रश्क तो वो शख़्स है जिसे अल्लाह तआ़ला ने माल दिया हो और वो राहे हक़ में ख़र्च करता हो और दूसरा वो है जिसे अल्लाह तआ़ला ने इल्म और दानिश मंदी दी हो और वो उसके साथ फ़ैसला करता हो और लोगों को इल्म की ताअ़लीम देता हो।
(बुख़ारी–सहीह–2/149–ह०-1409)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हसद (रश्क) तो सिर्फ़ दो आदमियों पर किया जा सकता है एक वो जिसे अल्लाह तआ़ला ने माल दिया हो और वो उस माल से दिन रात सद्क़ा ख़ैरात करता हो और दूसरा वो जिसे अल्लाह तआ़ला ने कुराने करीम का इ्ल्म दिया हो और वो रात की घड़ियों में उसके ज़रिये क़याम करता हो। (बुख़ारी–सहीह–06/468–ह०-7232)
(मुस्लिम–सहीह–02/299–ह०-1894)

# अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाले क़ाबिले रश्क़ हैं

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

जो लोग अपने रब की रज़ाजोई के लिये सब्र करते हैं

और नमाज़ क़ायम करते हैं और जो रिज़्क़ हमने उन्हें दिया है उसमें से पोशीदा और ऐअ़लानिया ख़र्च करते हैं और जो नेकी के ज़रिये बुराई को दूर करते रहते हैं यही वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत का (हसीन) घर है जहाँ सदाबहार बाग़ात हैं उनमें वो लोग दाख़िल होंगे और उनके आबा व अजदाद और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से जो भी नेकोकार होगा और फ़रिश्ते उनके पास (जन्नत के) हर दर'वाज़े से आयेंगे (और उन्हें खुश आमदीद कहते और मुबारक बाद देते हुये कहेंगे) तुम पर सलामती हो तुम्हारे सब्र करने के सिले में पस (अब देखो) आख़िरत का घर क्या खूब है।
(सूरह–राअ़द–13/22 ता 24)

**इरशादे बारी तअ़ाला हैः–**
बेशक ईमान वाले फ़लाह पा गये जो लोग अपनी नमाज़ में खुशूअ़ व खुजूअ़ करते हैं और जो बेहूदा बातों से (हर वक़्त) किनारा कश रहते हैं और जो ज़कात अदा करते हैं और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं सिवाए अपनी बीवियों के या उन बांदियों के जो उनकी हाथों की मम्लूक हैं बेशक उन पर कोई मलामत नहीं फिर जो शख़्स इन (औ़रतों) के सिवा किसी और का ख़्वाहिश मन्द हो तो ऐसे लोग ही हद से तजावुज़ करने वाले (सरकश) हैं और जो लोग अपनी अमानतों और अपने वाअ़दों की हिफ़ाज़त करने वाले और जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं यही लोग जन्नत के वारिस हैं ये लोग जन्नत के सबसे आअ़ला बाग़ात की विरासत पायेंगे वो उनमें हमेशा रहेंगे।
(सूरह–मु'मिनून–23/01 ता 11)

➡ हज़रत इ़याज़ बिन हिमार मुजाशिई़ (रज़िअल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जन्नती लोग तीन क़िस्म के हैं इन्साफ़ करने वाले हाकिम और सद्क़ा ख़ैरात करने वाले और वो जो अपने रिश्तेदारों और मुसलमानों के लिये नरम दिल हैं।
(मुस्लिम–सहीह–5/363–ह०-7207)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से बयान फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे कोई वसीयत फ़रमांयें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया नमाज़ क़ायम करो ज़कात अदा करो रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखो बैतुल्लाह का हज व उ़मराह करो और अपने माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक करो और सिला रहमी करो और मेहमानों की ख़िदमत करो भलाई का हुक्म दो बुराई से मनाअ़ करो हमेशा अहूले हक़ का साथ दो।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/790–ह०-7276)

➡ हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल आप मुझे कोई ऐसा अ़मल बताये कि जो मुझे जन्नत में पहुँचा दे तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करो और किसी तरह से उसका शरीक न ठहराओ और तुम नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और रिश्तेदारी को क़ायम रखो
(नसाई–सुनन–1/451–ह०-469)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो नमाज़ी होगा तो उसे जन्नत में नमाज़ के दर‘वाज़े से बुलाया जायेगा और जो शख़्स दुनिया में सद्क़ा व ख़ैरात करने वाला होगा तो उसको सद्क़े के दर‘वाज़े से बुलाया जायेगा और रोज़ादार होगा उसे बाबे रय्यान से बुलाया जायेगा (नसाई–सुनन–4/228–ह०-2441)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स पाँच फ़र्ज़ नमाज़ें पढ़े और रमज़ान के रोज़े रखे और ज़कात दे और सात कबीरा गुनाहों से परहेज़ करे तो उसके लिये जन्नत के सब दर‘वाज़े खोल दिये जायेंगे और उससे कहा जायेगा सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल होजा। (नसाई–सुनन–4/227–ह०-2440)

## अल्लाह की रिज़ा हासिल करने के लिये माल ख़र्च करने की मिसाल

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और जो लोग अपना माल अल्लाह तआ़ला की रिज़ा हासिल करने और अपने आप को (ईमान व इताअ़त पर) मज़बूत करने के लिये ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल एक ऐसे बाग़ की सी है जो ऊँची सतह पर हो उस पर ज़ोरदार बारिश हो तो वो दे गुना फल लाये और अगर उसे ज़ोरदार बारिश न मिले तो उसे शबनम (या हल्की सी फुवार) भी काफ़ी हो और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आअ़माल को खूब देखने वाला है।
(सूरह–बक़राह–2/265)

# राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले नेक लोगों की अ़लामत

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और जो लोग (अल्लाह की राह में उतना कुछ) देते हैं जितना वो दे सकते हैं और इसके बावुजूद उनके दिल ख़ौफ़ ज़दा रहते हैं कि वो अपने रब की तरफ़ पलट कर जाने वाले हैं (कहीं ये नामक़बूल न हो जायें) यही लोग भलाइयों (के समेटने में) जल्दी कर रहे हैं और भलाइयों में सबक़त ले जाने वाले हैं।
(सूरह–मु‘मिनून–23/60, 61)

## –: सद्क़ा आग से बचाव है :–

➡ हज़रत अ़दी बिन हातिम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी यहाँ तक कि तुममें से एक अपना सद्क़ा लेकर फिरेगा मगर उसे क़ुबूल करने वाला नहीं मिलेगा फिर रोज़े क़यामत तुममें से हर शख़्स अल्लाह तआ़ला के सामने खड़ा होगा जबकि अल्लाह तआ़ला और उसके दरमियान कोई पर्दा हाइल न होगा और न कोई तरजुमान होगा जो उसकी गुफ़्तगू नक़्ल करे बिला शुबाह फिर अल्लाह तआ़ला उससे फ़रमायेगा कि क्या मैंने तुझे माल नहीं दिया था वो अ़र्ज़ करेगा क्यों नहीं फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या मैंने तेरे पास एक अ़ज़ीम पैग़म्बर नहीं भेजा था वो अ़र्ज़ करेगा क्यों नहीं फिर वो शख़्स अपनी दांयी तरफ़ देखेगा तो उसे आग के सिवा कोई चीज़ नज़र नहीं आयेगी और फिर वो शख़्स बांयीं तरफ़ नज़र डालेगा तो उधर भी उसे आग

के सिवा कुछ नज़र नहीं आयेगा फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुममें से हर शख़्स को आग से बचना चाहिये अगरचा खजूर का एक टुकड़ा ही दे दे अगर ये भी मुम्किन न हो तो अच्छी बात कहदे क्योंकि ये भी सद्क़ा है।
(बुख़ारी–सहीह–2/152–ह०-1413)
(मुस्लिम–सहीह–3/46–ह०-2348)
(इब्ने माजा–सुनन–1/624–ह०-1843)

## एक वक़्त ऐसा आयेगा कि सद्क़ा लेने वाला न होगा

➡ हज़रत हारिसा बिन वह्ब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो सद्क़ा करो क्योंकि तुम पर एक वक़्त ऐसा आयेगा कि आदमी अपना सद्क़ा लिये हुये फिरेगा मगर कोई शख़्स ऐसा नहीं मिलेगा जो उसके सद्क़े को कुबूल करे वो शख़्स किसी को सद्क़ा देगा तो लेने वाला जवाब देगा अगर तू गुज़िस्ता कल लाया होता तो मैं इसे ले लेता लेकिन आज मुझे इसकी कोई ज़रुरत नहीं है।
(बुख़ारी–सहीह–2/151–ह०-1411, 7120)
(मुस्लिम–सहीह–3/43–ह०-2337)
(नसाई–सुनन–2/164–ह०-2559)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत उस वक़्त तक बरपा न होगी जब तक कि तुम्हारे पास माल की इस क़दर कसरत न हो जाये कि वो बहने लगे यहाँ–

तक कि मालदार को ये चीज़ परेशान कर देगी कि उस के सद्क़े को कौन कुबूल करे और नौबत यहाँ तक आ पहुँचेगी कि एक आदमी दूसरे को माल पेश करेगा तो वो जवाब देगा कि मुझे इसकी ज़रुरत नहीं।
(बुख़ारी–सहीह–2/152–ह०-1412)
(मुस्लिम–सहीह–3/44–ह०-2340)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों पर ऐसा वक़्त ज़रुर आयेगा कि आदमी सद्क़े का सोना लेकर फिरेगा और वो ऐसे शख़्स को न पायेगा जो उस के सोने को कुबूल करे और लोग ये मंज़र भी देखेंगे कि मर्दों की किल्लत और औ़रतों की कसरत होगी इस वजह से चालीस औ़रतें एक मर्द की पनाह में होंगी।
(बुख़ारी–सहीह–1/153–ह०-1414)

## पाकीज़ा माल से दिया हुआ सद्क़ा अल्लाह की बारगाह में कुबूल होता है

**इरशादे बारी तआ़ला है:–**
क्या वो नहीं जानते कि बेशक अल्लाह ही तो अपने बन्दों की तौबा कुबूल फ़रमाता है और सदक़ात याअ़नी ज़कात व ख़ैरात अपने दस्ते कुदरत में कुबूल फ़रमाता है और ये कि अल्लाह तआ़ला बहुत ज़्यादा तौबा कुबूल फ़रमाने वाला निहायत मेहरबान है।
(सूरह–तौबा–9/104)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला हलाल माल से दिये गये सद्क़े को कुबूल फ़रमाता और उसे सीधे अपने दांये हाथ में लेता है अगरचा वो एक खजूर ही हो फिर वो उस सद्क़े को मज़ीद बढ़ाता है यहाँ तक कि वो खजूर पहाड़ से भी बड़ा हो जाता है।
(बुख़ारी–सहीह–2/151–ह०-1410)
(इब्ने माजा–सुनन–1/623–ह०-1842)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/398–ह०-661)
(मुस्लिम–सहीह–3/45–ह०-2342)
(नसाई–सुनन–2/151–ह०-2529)

## –: पोशीदा सद्क़े की फ़ज़ीलत :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को पैदा फ़रमाया तो वो हिलने लगी तो फिर अल्लाह तआ़ला ने उस पर पहाड़ रख दिये तो ज़मीन हिलना बन्द हो गई तो फ़रिश्तों को पहाड़ों की कुव्वत पर तआ़ज्जुब हुआ और फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ पर‘वर दिगार तेरी मख़लूक़ में पहाड़ों से भी ताक़तवर कोई चीज़ है तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हाँ लोहा है जिसने पहाड़ को काट दिया फिर फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ रब तेरी मख़लूक़ में लोहे से भी ताक़तवर कोई चीज़ है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हाँ आग है जिसने लोहे को पिघला दिया फिर फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ की ऐ रब तेरी मख़लूक़ में आग से भी ज़्यादा ताक़त वर कोई चीज़ है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हाँ पानी है जिसने आग को बुझा दिया फिर फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ रब तेरी मख़लूक़ में पानी से भी ताक़तवर कोई

चीज़ है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हाँ हवा है जिसने पानी को गदला कर दिया फिर फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ किया ऐ रब तेरी मख़लूक़ में हवा से भी ज़्यादा ताक़त वर कोई चीज़ है तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हाँ इब्ने आदम का वो सद्क़ा जो दाँये हाथ से दिया गया और बाँये हाथ को ख़बर न हुई कि क्या दिया है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/887–ह०-3369)
(देलमी–मुस्नद अल फ़िरदौस–3/423–ह०-5298)

## –: मुस्तहक़ीन को खाना खिलाना :–

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
फिर तुम खुद भी खाओ और खस्ता हाल मुहताज को भी खिलाओ। (सूरह–हज–22/28)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
तो तुम खुद भी उसमें से खाओ और क़नाअ़त से बैठे रहने वालों को और सुवाल करने वाले (ग़रीब मिस्कीन और मुहताजों) को भी खिलाओ। (सूरह–हज–22/36)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
(हुक्म होगा) उसे पकड़ लो और उसे तौक़ पहना दो फिर उसे दोज़ख़ में झोंक दो फिर एक ज़ंजीर में उसे जकड़ दो जिसकी लम्बाई सत्तर गज़ है बेशक ये बड़ी अ़ज़मत वाले अल्लाह पर ईमान नहीं रखता था और न मुहताज को खाना खिलाने पर रग़बत दिलाता था सो आज के दिन उसका कोई भी दोस्त न होगा और न पीप के सिवा उसके लिये कोई खाना होगा कि जिसे गुनाहगारों के सिवा कोई न खायेगा।
(सूरह–हाक़्क़ाह–69/30 ता 37)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

तो ये वो शख़्स है जो यतीम को धक्के देता है (यानी यतीमों की हाजात को रद्द करता और उन्हें हक़ से महरुम रखता है) और मुहताज को खाना खिलाने की तर्ग़ीब नहीं देता।

(सूरह-माऊ़न-107/01 ता 03)

➡ हज़रत साअ़द बिन ऊ़बादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं मैंने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सद्क़े की कौन सी सूरत ज़्यादा फ़ज़ीलत की बाइस है तो आपने फ़रमाया कि पानी पिलाना।

(इब्ने माजा-सुनन-3/185-ह०-3684)

(अबू दाऊद-सुनन-2/332-ह०-1679)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत लोग (अह्ले जन्नत) सफ़ों में क़ायम होंगे कि एक दोज़ख़ी एक मर्द के पास से गुज़रेगा तो कहेगा ऐ फुलां आप को वो दिन याद नहीं जब आपने मुझसे पानी मांगा था तो मैंने आप को पानी पिलाया था चुनांचा वो जन्नती उस दोज़ख़ी की सिफ़ारिश करेगा एक और मर्द गुज़रेगा तो कहेगा कि ऐ फुलां आपको वो दिन याद नहीं जब मैंने आपको तहारत के लिये पानी दिया था चुनांचा वो जन्नती उस दोज़ख़ी की सिफ़ारिश करेगा।

(इब्ने माजा-सुनन-3/185-ह०-3685)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो मुसलमान किसी बरहना (नंगे) मुसलमान को कपड़ा पहनाये तो अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत का सब्ज़ लिबास पहनायेगा और जो मुसलमान किसी मुसलमान को भूक की हालत में खाना खिलाये तो अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत के फल और मेवे खिलायेगा जो मुसलमान किसी मुसलमान को प्यास की हालत में पानी पिलाये तो अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत की शराब यानी शराबे तहूर पिलायेगा।
(अबू दाऊद–सुनन–2/333–ह०-1682)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/267–ह०-2449)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस शख़्स ने अपने किसी भाई को खाना खिलाया यहाँ तक कि वो सेर हो गया व उसको पानी पिलाया यहाँ तक कि उस की प्यास बुझ गई तो अल्लाह तआ़ला उसको दोज़ख की आग से सात खन्दक़ के जितने फ़ासले पर दूर कर देगा और हर ख़न्दक़ के दरमियान पाँच सौ साल का फ़ासला है।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/124–ह०-6518)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/144–ह०-172)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि ऐ इब्ने आदम मैंने तुझसे खाना माँगा लेकिन तूने मुझे खाना नहीं खिलाया तो बन्दा अ़र्ज़ करेगा ऐ अल्लाह मैं तुझको खाना कैसे खिलाता तू तो रब्बुल आ़लमीन है फिर अल्लाह तआ़ला

फ़रमायेगा क्या तुझे माअ़लूम नहीं कि मेरा फुलां बन्दे ने तुझसे खाना माँगा था अगर तू उसे खाना खिलाता तो गोया मुझे खिलाता फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ इब्ने आदम मैंने तुझसे पानी माँगा लेकिन तूने मुझे पानी नहीं पिलाया तो बन्दा अ़र्ज़ करेगा ऐ अल्लाह मैं तुझको पानी कैसे पिलाता तू तो तमाम जहानों का रब है फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या तुझे माअ़लूम नहीं कि मेरे फुलां बन्दे ने तुझसे पानी माँगा था अगर तू उसे पानी पिलाता तो गोया मुझे पानी पिलाता और तू उसे पानी पिलाता तो मुझे उसके पास पाता।
(मुस्लिम–सहीह–6/201-ह०–6556)
(बुख़ारी–सहीह–1/182–ह०-517)
(इब्ने हिब्बान–सही–1/426-ह०–269, 944)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/446-ह०–9182)
(अत्तरग़ीब–वत्तरहीब–2/418-ह०–1742)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से दरयाफ़्त किया कि इस्लाम में कौन सा अ़मल सबसे बेहतर है तो आप ने फ़रमाया कि तू खाना खिलाये और सलाम करे जान पहचान वाले को और अन्जान को।
(इब्ने माजा–सुनन–3/61–ह०-3253)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम रहमान की इ़बादत करो और खाना खिलाओ और सलाम को अ़ाम करो और सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओ। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/998–ह०-1855)

# दरख़्त व खेत से जानवर खाये तो सद्क़े का सवाब मिलता है

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो मुसलमान दरख़्त लगाये या खेत में गल्ला उगाये फिर उसमें से कोई भी परिन्दा या जानवर या इन्सान खाये तो दरख़्त लगाने वाले या खेती करने वाले को सद्क़े का सवाब मिलेगा। (बुख़ारी–सहीह–2/610–ह०-2320)
(मुस्लिम–सहीह–4/188–ह०-3972)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो मुसलमान दरख़्त लगाये फिर उसमें से कोई खाये तो दरख़्त लगाने वाले को सद्क़े का सवाब मिलेगा और उसमें से जो चोरी जायेगा उसमें भी उसे सद्क़े का अज्र मिलेगा और जो परिन्दे या जानवर खायेंगे उसमें भी सद्क़े का सवाब मिलेगा। (बुख़ारी–सहीह–5/590–ह०-6012)
(मुस्लिम–सहीह–4/187–ह०-3968)

## –: सद्क़ा ख़ैरात गुनाहों का कफ़्फ़ारा है :–

**इरशादे बारी तआ़ला है:–**
अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर करके दो तो ये भी अच्छा है (इससे दूसरों को तरग़ीब होगी) और अगर तुम उन्हें मख़्फ़ी रखो और मुहताजों को पहुँचा दो तो ये तुम्हारे लिये और बेहतर है और अल्लाह तआ़ला (उस ख़ैरात

की वजह से) तुम्हारे कुछ गुनाहों को तुमसे दूर फ़रमां देगा और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आअ़माल से बाख़बर है। (सूरह–बक़राह–2/271)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
अल्लाह तआ़ला ने (बनी इसराईल से) फ़रमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूँ (याअ़नी मेरी खुसूसी मदद व नुसरत तुम्हारे साथ रहेगी) अगर तुमने नमाज़ क़ायम रखी व ज़काात देते रहे और मेरे रसूलों पर हमेशा ईमान लाते रहे और (उनके पैग़म्बराना मिशन) की मदद करते रहे और अल्लाह तआ़ला को (उसके दीन की हिमायत व नुसरत में माल ख़र्च करके) क़र्ज़े हसन देते रहे तो मैं तुमसे तुम्हारे गुनाहों को ज़रुर मिटा दूँगा और तुम्हें यक़ीनन ऐसी जन्नतों में दाख़िल करुँगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं। (सूरह–मायदा–5/12)

## राहे खुदा में ख़र्च अल्लाह की रिज़ा व कुर्बत हासिल करने का ज़रिया है

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
जो अपना माल (अल्लाह तआ़ला की राह में) देता है कि (अपनी जानो माल की) पाकीज़गी हासिल करे और किसी पर उसका कोई एहसान नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो मगर वो सिर्फ़ अपने रब की रज़ा जोई के लिये (माल ख़र्च कर रहा है) और अ़नकरीब वो (अल्लाह की अ़ता से और अल्लाह तआ़ला उसकी वफ़ा से) राज़ी हो जायेगा। (सूरह–लैल–92/17-21)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
और बाअ़ज़ अह्ले देहात में से ऐसे भी हैं जो अल्लाह

तआ़ला पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ (राहे खुदा में) ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह तआ़ला के हुजूर तक़र्रुब और रसूल की (रहमत भरी) दुआ़ओं का वसीला समझते हैं बेशक वो (ख़र्च करना) उनके लिये बाइसे कुर्बे इलाही है जल्द ही अल्लाह उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमायेगा बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (सूरह–तौबा–9/99)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला तीन शख़्सों से मुहब्बत रखता है एक वो शख़्स जो रात को खड़ा होकर अल्लाह तआ़ला की किताब पढ़े यानी नमाज़ पढ़े दूसरा वो शख़्स जो खुफ़िया तौर पर दाँये हाथ से ख़ैरात करे और तीसरा वो शख़्स जो किसी लश्कर में हो और बाक़ी साथी भाग जायें और वो दुश्मन के मुक़ाबले में खड़ा रहे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/353–ह०-2567)

## अल्लाह की राह में माल देना अल्लाह को देने के मुतरादिफ़

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

कौन है जो अल्लाह तआ़ला को क़र्ज़े हसना दे फिर वो उसे कई गुना बढ़ा देगा और अल्लाह ही (तुम्हारे रिज़्क़ में) तंगी और कुशादगी करता है और तुम उसकी ही तरफ़ लौटाये जाओगे। (सूरह–बक़राह–2/245)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

अगर तुम अल्लाह को (इख़लास और नेक नीयती से)

अच्छा क़र्ज़ दोगे तो वो उसे तुम्हारे लिये कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह तआ़ला बड़ा क़द्रदान (और) बड़ा बुर्दबार है वो हर पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला, सब पर ग़ालिब, बड़े इक़्तिदार का मालिक और बड़ी हिकमत वाला है।
(सूरह–तग़ाबुन–64/17, 18)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
कौन शख़्स है जो अल्लाह तआ़ला को क़र्ज़े हसना के तौर पर क़र्ज़ दे तो वो उसके लिये उस (क़र्ज़) को कई गुना बढ़ाता रहे और उसके लिये बड़ी अ़ज़मत वाला अज्र है। (सूरह–हदीद–57/11)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात देते रहो और अल्लाह को क़र्ज़े हसन दिया करो और जो भलाई तुम अपने लिये आगे भेजोगे उसे अल्लाह के हुज़ूर बेहतर और अज्र में बुज़ुर्गतर पाओगे और अल्लाह तआ़ला से बख़्शिश तलब करते रहो अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बेहद रहम फ़रमाने वाला है। (सूरह–मुज़म्मिल–73/20)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
बेशक सद्क़ा व ख़ैरात देने वाले मर्द और सद्क़ा व ख़ैरात देने वाली औ़रतें और जिन्होंने अल्लाह को क़र्ज़े हसना के तौर पर क़र्ज़ दिया उनके लिये (सद्क़ा और क़र्ज़े हसना का अज्र) कई गुना बढ़ा दिया जायेगा और उनके लिये बड़ी इ़ज़्ज़त वाला सवाब होगा।
(सूरह–हदीद–57/18)

फ़क़ीर व मिस्कीन और मुहताजों की माली मदद करना

कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद करने वालों की माली इमदाद करना वग़ैराह अल्लाह तआ़ला को अच्छा क़र्ज़ देने के मुतरादिफ़ है।

## सद्क़ात ख़ैरात और ज़कात की अदायगी में जल्दी करना

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

जो माल हमने तुम्हें अ़ता किया है उसमें से (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो क़ब्ल इसके कि तुममें से किसी को मौत आ जाये फिर वो कहने लगे ऐ मेरे रब तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक मुहलत क्यों न दी कि मैं सद्क़ा ख़ैरात कर लेता और नेकोकारों में से हो जाता और अल्लाह तआ़ला हरगिज़ किसी को मुहलत नहीं देता जब उसकी मौत का वक़्त आ जाता है और अल्लाह तआ़ला उन कामों से खूब आगाह है जो तुम करते हो (सूरह-मुनाफ़िक़ून-63/10)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

ऐ ईमान वालो जो कुछ हमने तुम्हें अ़ता किया है उसमें से (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो क़ब्ल इसके कि वो दिन आ जाये कि जिसमें कोई ख़रीद, फ़रोख़्त न होगी (सूरह-बक़राह-2/254)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः-**

आप मेरे मोमिन बन्दों से फ़रमांदें कि वो नमाज़ क़ायम रखें और जो रिज़्क़ हमने उन्हें दिया उसमें से पोशीदा और ऐअ़लानियाँ (राहे खुदा में) खर्च करें उस दिन के आने से पहले जिसमें कोई ख़रीद फ़रोख़्त न होगी और न ही कोई दोस्ती काम आयेगी। (सूरह-इब्राहीम-14/31)

# राहे ख़ुदा में ख़र्च करना ख़ौफ़ और ग़म से निजात का बाइस

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
जो लोग अल्लाह की राह में अपना माल ख़र्च करते हैं फिर अपने ख़र्च किये हुये के पीछे न एहसान जतलाते हैं और न ही अज़्ज़ियत देते हैं उनके लिये उनके रब के पास उनका अज्र है और (रोज़े क़यामत) उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मगीन होंगे।
(सूरह–बक़राह–2/262)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सात क़िस्म के लोग ऐसे है जिन्हें क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला साया अ़ता फ़रमायेगा जिस दिन उसके साये के सिवा कोई दूसरा साया न होगा उनमें से एक वो शख़्स हैं जिसने इस तरह छुपाकर सद्क़ा दिया कि बाँये हाथ को ख़बर न हुई कि दाँये हाथ ने क्या दिया।
(बुख़ारी–सहीह–1/437–ह०-660)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/226-ह०–2390)
(बुख़ारी–सही–6/229-ह०–6806)
(मुस्लिम–सही–3/58-ह०–2380)
(बुख़ारी–सही–1/437-ह०–660)
(नसाई–सुनन–3/572-ह०–5386)

➡ हज़रत उ़क़बा बिन आमिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सद्क़ा अ़ज़ाबे

क़ब्र से बचाव है और मोमिन क़यामत के दिन अपने सद्क़े के साये में होगा।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–17/286–ह०-787)

## राहे खुदा में ख़र्च करना नफ़अ़ देने वाली तिजारत है

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
बेशक जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं व नमाज़ क़ायम रखते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अ़ता किया है उसमें से (राहे खुदा में) ख़र्च करते हैं पोशीदा भी और ज़ाहिर भी वो ऐसी (उख़्र‘वी) तिजारत के उम्मीदवार हैं कि जो कभी ख़सारे में न होगी ताकि अल्लाह उनका अज्र उन्हें पूरा पूरा अ़ता फ़रमाये और (अल्लाह तआ़ला) अपने फ़ज़्ल से उन्हें मज़ीद नवाज़े बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला बड़ा ही शुक्र कुबूल फ़रमाने वाला है। (सूरह–फ़ातिर–35/29,30)

## सद्क़ात का दिखावा बर्बादी का बाइस

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**
ऐ ईमान वालो अपने सद्क़ात एहसान जता कर और दुख देकर उस शख़्स की तरह बर्बाद न किया करो जो माल लोगों को दिखाने के लिये ख़र्च करता है और न अल्लाह पर ईमान रखता है और न रोज़े क़यामत पर उसकी मिसाल एक ऐसे चिकने पत्थर की सी है जिस पर थोड़ी सी मिट्टी पड़ी हुई हो फिर उस पर ज़ोरदार बारिस हो तो वो उसे (फिर वही) सख़्त व साफ़ पत्थर करके छोड़ दे सो अपनी कमाई में से उन (रियाकारों) के हाथ कुछ भी नहीं आयेगा। (सूरह–बक़राह–2/264)

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और जो लोग अपना माल लोगों को दिखावे के लिये ख़र्च करते हैं और न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न योमे आख़िरत पर और शैतान जिसका भी साथी हो गया वो बुरा साथी है। (सूरह–निसा–4/38)

## मुराद पूरी होने के बाअ़द सद्क़ा देना

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और उन (मुनाफ़िक़ों) में (बाअ़ज़) वो भी हैं जिन्होंने अल्लाह से अ़हद किया था कि अगर अल्लाह ने हमें अपने फ़ज़्ल से अ़ता किया तो हम ज़रुर राहे खुदा में ख़ैरात करेंगे और हम ज़रुर नेकोकारों में से हो जायेंगे जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से माल दिया तो वो उसमें बुख़्ल करने लगे और अपने अ़हद से रुगरदानी करते हुये फिर गये तो अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों में निफ़ाक़ को (उनके अपने बुख़्ल का) अन्जाम बना दिया उस दिन तक कि जब वो उससे मिलेंगे इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह तआ़ला से अपने किये हुये अ़हद की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की और इस वजह से भी कि वो झूट बोला करते थे। (सूरह–तौबा–9/75 ता 77)

## ज़मीन की पैदावार में ग़रीबों को हिस्सा न देना ख़सारे का बाइस

**इरशादे बारी तआ़ला हैः–**

और उन्होंने कोई इस्तिसना नहीं किया था (यानी इन्शा अल्लाह नहीं कहा या ग़रीबों मिस्कीनों व मुहताजों के हिस्से को अलग नहीं किया) तो आपके रब की जानिब से एक आफ़त (रात में) चक्कर लगा गई जब वो लोग

अभी सोए हुये थे तो वो (लहलहाता फलों से लदा हुआ बाग़) कटी हुई फ़स्ल की तरह हो गया फिर सुबह होते ही वो एक दूसरे को पुकारने लगे कि अपनी खेती पर सवेरे सवेरे चलो अगर तुम फल तोड़ना चाहते हो सो वो लोग चल पड़े और आपस में चुपके चुपके ये कहते जाते थे कि आज उस बाग़ में तुम्हारे पास हरगिज़ कोई ग़रीब (मिस्कीन और मुहताज) न आने पाये और वो सुवह सवेरे (फल काटने और ग़रीबों को उनका हिस्सा न देने) के मन्सूबे पर क़ादिर बनते हुये चल पड़े फिर जब उन्होंने उस (वीरान बाग़) को देखा तो कहने लगे कि यक़ीनन हम रास्ता भूल गये (और ये हमारा बाग़ नहीं है) बल्कि हम तो महरुम हो गये हैं जो उनमें से बेहतर आदमी था उसने कहा कि मैंने तुमसे कहा था कि तुम (अल्लाह का) ज़िक्र व तस्बीह क्यों नहीं करते तब वो कहने लगे हमारा रब पाक है बेशक हम ही ज़ालिम थे सो वो एक दूसरे की तरफ़ मुतावज्जै होकर बाहम मलामत करने लगे और कहने लगे हाय हमारी शामत बेशक हम ही सरकश और बाग़ी थे पस उम्मीद है कि हमारा रब हमें इसके बदले में बेहतर देगा बेशक हम अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करते हैं।
(सूरह–क़लम–68/18 ता 32)

## –: एक नेकी का बदला दस गुना :–

**इरशादे बारी तआ़ला है:–**
जो कोई एक नेकी लायेगा तो उसके लिये (बतौरे अज्र) उस जैसी दस नेकियाँ हैं और जो कोई भी एक गुनाह लायेगा तो उसको उस जैसे एक (गुनाह) के सिवा सज़ा नहीं दी जायेगी और वो जुल्म नहीं किये जायेंगे।
(सूरह–अनआ़म–6/160)

## -: सद्क़ा दोज़ख से छुटकारा है :-

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सद्क़ा किया करो इसलिये कि सद्क़ा दोज़ख़ से छुटकारा है।
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-3/176-ह०-3355)

➡ हज़रत मैमूना बिन्ते साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स सवाब की नियत से अल्लाह तआ़ला की रज़ा जोई के लिये सद्क़ा करता है तो ये उसके लिये नारे दोज़ख़ से रुकावट है। (तबरानी-मुअ़जम कबीर-25/35-ह०-3449)

## सद्क़ा बुराई और बदबख़्ती के 70 दर'वाज़े बन्द करता है

➡ हज़रत राफ़ेअ़ बिन खदीज (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सद्क़ा बुराई और बदबख़्ती के 70 दरवाज़े बन्द कर देता है।
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-4/274-ह०-4402)

## कोई मुसीबत सद्क़े के ऊपर से नहीं गुज़र सकती

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सद्क़ा करने में जल्दी करो बेशक कोई मुसीबत सद्क़े के ऊपर से नहीं गुज़र सकती। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/175–ह०-3353)

## सद्क़ा अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब व गुस्से को ठन्डा कर देता है

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक सद्क़ा अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब को बुझा देता है और बुरी मौत मरने से दूर कर देता हे। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/400–ह०-664) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/175–ह०-3351)

## तू ख़र्च कर अल्लाह तुझ पर ख़र्च करेगा

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ इब्ने आदम तू (मेरी राह में) ख़र्च कर मैं तुझ पर ख़र्च करूँगा नीज़ फ़रमाया कि अल्लाह का हाथ भरा हुआ है रात और दिन मुसलसल ख़र्च करने से भी उसमें कोई कमी नहीं आती उसका फ़ैज़ जारी रहता है तुमने देखा नहीं जब से अल्लाह तआ़ला ने ज़मीनो आसमान को पैदा किया तब से वो मुसलसल ख़र्च किये जा रहा है इसके बावुजूद भी कोई कमी नहीं आती। (बुख़ारी–सहीह–4/610–ह०-4684)
(मुस्लिम–सहीह–2/340–ह०-2380)
(इब्ने माजा–सुनन–1/101–ह०-197)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/641–ह०-3045)

## -: बीमारी का इलाज सद्क़े से करो :-

➡ हज़रत समुराह बिन जुन्दुब व अबू उमामा रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा से मर'वी है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अपने माल और दौलत को ज़कात के ज़रिये बचाओ और तुम अपनी बीमारियों का इलाज सद्क़े से करो और मुसीबत का सामना दुआ़ा से करो (शुअ़बुल ईमान-3/230-ह०-3557) (तबरानी-मुअ़जम कबीर-10/157-ह०-10196)

## -: सद्क़े का का सवाब 10 गुना :-

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने शबे मेअ़राज जन्नत के दरवाज़े पर ये लिखा देखा है कि सद्क़े का सवाब (10) दस गुना मिलेगा और क़र्ज देने का सवाब 18 गुना मिलेगा। (इब्ने माजा-सुनन-2/222-ह०-2431)

## अह्लो अ़याल पर ख़र्च करना सद्क़ा है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मर्द अपने अह्ल व अ़याल पर सवाब की नियत से जो भी ख़र्च करता है तो वो उसके हक़ में सद्क़ा बन जाता है।
(बुख़ारी-सहीह-1/112-ह०-55, 5351)
(मुस्लिम-सहीह-2/347-ह०-2322)
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/1053-ह०-1965)

➡ हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम जो भी ख़र्च करते हो कि जिससे तुम्हारा मक़सद रज़ाए इलाही हो तो तुम्हें उस पर अज्र दिया जायेगा यहाँ तक कि तुम अपनी बीवी के मुँह में जो लुक्मा डालते हो तो उस पर भी तुम्हें अज्र दिया जाता है।
(बुख़ारी–सहीह–1/112–ह०-56)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/602–ह०-6555)

➡ हज़रत मिक़दाम बिन माअ़दी करिब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मर्द ने अपने हाथ की मज़दूरी से ज़्यादा कमाई हासिल नहीं की और मर्द अपने ऊपर और अपनी ज़ोजा पर और अपने बच्चों पर और अपने ख़ादिम पर जो भी ख़र्च करे वो सद्क़ा है। (बुख़ारी–सहीह–1/112–ह०-55)
(इब्ने माजा–सुनन–2/127–ह०-2138)

## –: मरने वाले की तरफ़ से सद्क़ा :–

➡ हज़रत साअ़द बिन ऊ़बादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मेरी वालिदा फ़ौत हो गईं हैं तो कौन सा सद्क़ा अफ़ज़ल है तो आपने फ़रमाया ‘‘पानी’’ चुनांचा उन्होंने एक कुँआ खुदवाया और कहा कि ये मेरी वालिदा उम्मे साअ़द की तरफ़ से सद्क़ा है।
(अबू दाऊद–सुनन–2/333–ह०-1681)
(नसाई–सुनन–5/485–ह०-3686, 3696)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक आदमी ने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया कि मेरे वालिद फ़ौत हो गये हैं अगर मैं उनकी तरफ़ से सद्क़ा करूँ तो क्या उनके गुनाह मुआ़फ़ हो जायेंगे तो आपने फ़रमाया हाँ। (मुस्लिम–सहीह–3/396–ह०-4219)
(इब्ने माजा–सुनन–2/329–ह०-2716)
(नसाई–सुनन–5/483–ह०-3681)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब इन्सान मर जाता है तो तीन सूरतों के अ़लावा उसके सब अ़मल मुनक़ताअ़ हो जाते हैं सद्क़ा ज़ारिया, वो इ़ल्म जिससे बाद में भी फ़ायदा उठाया जाता रहे और नेक औलाद जो उसके लिये दुआ़ करती है (नसाई–5/483–ह०-3681)
(मुस्लिम–सहीह–3/398–ह०-4223)
(अबू दाऊद–सुनन–3/323–ह०-2880)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मेरी माँ मर गई है अगर मैं उसकी तरफ़ से सद्क़ा करूँ तो क्या उसे फ़ायदा होगा तो आपने फ़रमाया कि हाँ फिर उसने कहा कि मेरा एक बाग़ है सो मैं आपको गवाह करता हूँ कि मैंने उस बाग़ को अपनी माँ की तरफ़ से सद्क़ा किया। (बुख़ारी–सहीह–3/191–ह०-2756)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/403–ह०-669)
(अबू दाऊद–सुनन–3/324–ह०-2882)
(नसाई–सुनन–5/485–ह०-3685)

# औ़रत का शौहर के माल से सद्क़ा

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब औ़रत अपने शौहर के माल में से ख़ैरात करे तो दोंनों को बराबर अज्र मिलता है यानी शौहर व उसकी बीवी को और किसी के अज्र में कोई कमी नहीं होती शौहर को कमाई का अज्र और औ़रत को माल ख़र्च करने का अज्र मिलेगा। (बुख़ारी–सहीह–2/165–ह०-1437)
(मुस्लिम–सहीह–3/55–ह०-2370)
(अबू दाऊद–सुनन–2/395–ह०-1685)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/403–ह०-671] 672)
(नसाई–सुनन–2/157–ह०-2543)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब औ़रत अपने शौहर की कमाई से उसकी इजाज़त के बग़ैर सद्क़ा दे तो शौहर को भी उसका आधा सवाब मिलेगा।
(बुख़ारी–सहीह–5/176–ह०-5195)
(बुख़ारी–सहीह–2/479–ह०-2066)
(अबू दाऊद–सुनन–2/336–ह०-1687)

## –: हर नेकी और भलाई सद्क़ा है :–

➡ हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया किसी परेशान

हाल ज़रुरत मन्द की मदद करना सद्क़ा है लोगों को भलाई की तरफ़ राग़िब करना सद्क़ा है व अच्छे कामों की तल्क़ीन करना सद्क़ा है और लोगों को अपने शर से बचाकर रखना भी सद्क़ा है।
(बुख़ारी–सहीह–5/593–ह०-6022)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने मुसलमान भाई के सामने मुस्कुराना भी सद्क़ा है और नेकी की दाअ़वत देना और अच्छी बात का हुक्म देना और बुरी बातों से मनाअ़ करना तेरे लिये सद्क़ा है और किसी भूले हुये को रास्ता बताना भी तेरे लिये सद्क़ा है और रास्ते से पत्थर हड्डी और काँटों को दूर कर देना तेरे लिये सद्क़ा है यानी रास्ते से हर तकलीफ़ देने वाली चीज़ को हटा देना तेरे लिये सद्क़ा है और अपने भाई के लिये डोल में पानी डाल देना तेरे लिये सद्क़ा है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1049–ह०-1956)

➡ हज़रत अबू बरज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल आप मुझे कोई ऐसा अ़मल बतायें कि जिससे मैं फ़ायदा उठाऊँ (उस पर अ़मल करके) पस आपने फ़रमाया कि मुसलमानों के रास्ते से तकलीफ़ ज़दा हर चीज़ को हटा दिया करो। (इब्ने माजा–सुनन–3/184–ह०-3681)
(मुस्लिम–सहीह–6/229–ह०-6674)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रास्ते में दरख़्त की एक शाख़ पड़ी थी जिससे लोगों को ईज़ा पहुँचती थी एक मर्द ने उसे रास्ते से हटा दिया इस अ़मल के सबब उसे बख़्श दिया गया और उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। (बुख़ारी–सहीह–1/435–ह०-652)
(बुख़ारी–सहीह–2/698–ह०-2472)
(मुस्लिम–सहीह–5/178–ह०-4940, 6671)
(इब्ने माजा–सुनन–3/184–ह०-3682)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1050–ह०-1958)
(अबू दाऊद–सुनन–6/897–ह०-5245)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रास्ते से तकलीफ़ ज़दा चीज़ हटाना भी सद्क़ा है। (बुख़ारी–सहीह–2/691)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर तस्बीह सद्क़ा है और हर तकबीर सद्क़ा है और हर अच्छी बात सिखाना सद्क़ा है और बुरी बात से रोकना सद्क़ा है। (मुस्लिम–सहीह–3/41–ह०-2329)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर नेकी सद्क़ा है।
(मुस्लिम–सहीह–3/41–ह०-2328)
(अबू दाऊद–सुनन–6/732–ह०-4947)

➡ हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस शख़्स ने दूध का मनीहा दिया (यानी दूध देने वाली बकरी या ऊँटनी किसी को इस शर्त पर दिया कि जब तक वो चाहे इस के दूध से फ़ायदा उठाये और फिर मालिक को फेर दे) या चाँदी का मनीहा दिया (यानी रुपया पैसा कर्ज़ देना) या किसी को राह बताई तो उसे लौंडी या गुलाम को आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1049–ह०-1957)

## –: हर जोड़ पर सदक़ा वाजिब है :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर दिन जिसमें सूरज तुलूअ़ होता है आदमी के हर जोड़ पर सद्क़ा वाजिब होता है तो दो आदमियों में इन्साफ़ कर देना ये भी एक सद्क़ा है किसी की मदद कर देना इतनी कि उसे सवारी पर चढ़ा दिया या उसका माल लाद दिया ये भी एक सद्क़ा है और उ़म्दाह बात कहना ये भी एक सद्क़ा है हर वो क़दम जो नमाज़ के लिये मस्जिद जाने में रखता है वो भी एक सद्क़ा है और तकलीफ़ ज़दा चीज़ रास्ते से हटा देना भी एक सद्क़ा है।
(बुख़ारी–सहीह–3/313–ह०-2989)
(मुस्लिम–सहीह–2/51–ह०-2335)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद में तीन सौ साठ हड्डियाँ

और जोड़ हैं हर एक की तरफ़ से रोज़ाना सद्क़ा देना लाज़िम होता है हर अच्छी बात सद्क़ा होती है कोई अपने भाई की मदद करे तो ये सद्क़ा होगा किसी को पानी पिलाना सद्क़ा है और रास्ते से रुकावट हटा देना भी सद्क़ा है (अल अदब अल मुफ़रद–1/214–ह०-427)

➡उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया आदमी के जिस्म में तीन सौ साठ जोड़ हैं सो जिसने अल्लाह तअ़ाला की हम्दो सना की और लाइलाहा इल्लल्लाह कहा और अस्तग़फ़िरुल्लाह कहा और लोगों की राह से तकलीफ़ ज़दा चीज़ हटा दी या अच्छी बात सिखाई या बुरी बात से रोका उन तीन सौ साठ जोड़ों की तादाद के बराबर (इस तरह के अ़मल किये) तो वो उस दिन इस तरह चलेगा कि वो खुद को दोज़ख़ की आग से दूर कर चुका होगा। (मुस्लिम–सहीह–2/350–ह०-2330)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सुबह होती है और इन्सान के जोड़ जोड़ पर सद्क़ा वाजिब हो चुका होता है उसका अपने मिलने वाले को सलाम कहना सद्क़ा है किसी को नेकी की बात बताना सद्क़ा है बुराई से मना करना सद्क़ा है रास्ते से तकललीफ़ ज़दा चीज़ हटाना सद्क़ा है बीवी से सुहवत करना सद्क़ा है सहाबा ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह वो अपनी शहवत पूरी कर ले और वो उसके लिये सद्क़ा बने ये क्योंकर है आपने फ़रमाया कि बताओ अगर वो ये काम हराम तरीक़े से करे तो क्या वो गुनाहगार न होगा इसके बिल मुक़ाबिल

उसका हलाल तरीक़े से अपनी ख़्वाहिश को पूरी करना सवाब और सद्क़ा है।
(अबू दाऊद–सुनन–2/48–ह०-1285)
(अबू दाऊद–सुनन–4/896–ह०-5243)

# बेवा व मसाकीन के लिये दौड़ धूप करने वाले की मिसाल

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया बेवा और मसाकीन के लिये मेहनत व मशक़्क़त और उनकी हिफ़ाज़त करने वाले शख़्स की मिसाल राहे खुदा में जिहाद करने वाले की तरह है। (बुख़ारी–सहीह–5/587–ह०-6006)
(मुस्लिम–सहीह–5/495–ह०-7468)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1054–ह०-1969)
(नसाई–सुनन–2/172–ह०-2581)

# यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नती

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं और यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नत में इस तरह होंगे आपने अपनी शहादत और दरमियानी उँगली से इशारा किया और दोंनों के दरमियान कुछ फ़ासला रखा।
(बुख़ारी–सहीह–5/587–ह०-6005)
(मुस्लिम–सहीह–5/495–ह०-7469)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1031–ह०-1918)
(अबू दाऊद–सुनन–4/144–ह०-5150)

# मस्जिद में ग़रीब, मिस्कीन साइल को सद्क़ा ख़ैरात देना

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जुमआ़ के दिन खुत्बा इरशाद फ़रमां रहे थे कि इस दौरान एक शख़्स हाज़िर हुआ जो ख़राब व ख़स्ता हाल में था अपने उसके लिये सद्क़े की तर्ग़ीब दिलाई और लोगों को उसकी जानिब तवज्जौ दिलाई तो लोगों ने कपड़े बग़ैराह डालने शुरु किये तो रसूलुल्लाह ने वो उस ख़स्ताहाल शख़्स को दे दिये।
(नसाई–सुनन–3/249–ह०-1409, 1411)

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने पूछा कि तुममें से कौन ऐसा है जिसने आज किसी मिस्कीन को खाना खिलाया हो तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने कहा कि मैं मस्जिद में आया तो देखा एक फ़क़ीर माँग रहा है तो मैंने रोटी का टुकड़ा उसको दे दिया।
(अबू दाऊद–सुनन–2/326–ह०-1670)

# बन्दे का माल वही जो आगे भेजा

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती हैं कि उन्होंने एक बकरी को ज़िब्हा किया तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने पूछा कि उसमें से कुछ बाक़ी है तो आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने

कहा एक शाना बाक़ी है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उस शाना के सिवा सब बाक़ी है याअ़नी जो अल्लाह की राह में दे दिया वो बाक़ी है और जो अपने लिये रख लिया वो फ़ानी है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/282-ह०–2470)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तेरा माल वो है जो नेक आअ़माल की सूरत में तूने आगे भेजा और जो माल तू अपने पीछे छोड़ेगा वो माल तेरा नहीं है बल्कि वो तेरे वारिसों का होगा।
(बुख़ारी–सहीह–6/54-ह०–6442)
(नसाई–सुनन–2/558-ह०–3646)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/331-ह०–7913)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/585-ह०–6509)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब मरने वाला मर जाता है तो फ़रिश्ते कहते हैं कि इसने आगे क्या भेजा और लोग कहते हैं कि इसने पीछे क्या छोड़ा।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/292-ह०–10445)

## बन्दे का माल तीन तरह का होता है

➡ हज़रत मुतरफ़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उस वक़्त आप ‘अल्हाकुमुत्तकासुर’ की तिलावत फ़रमां

रहे थे फिर आप ने फ़रमाया कि बेशक बन्दा कहता है कि मेरा माल मेरा माल मगर उसका माल तीन तरह का होता है जो उसने खा लिया और हज़्म कर लिया और जो उसने पहन लिया उसे फाड़ लिया या बोसीदा हो गया और जो माल (राहे खुदा में) आगे भेज दिया और इनके अ़लावा जो भी माल है वो सब छोड़ने वाला है और वो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ जाने वाला है।
(मुस्लिम–सहीह–5/477-ह०–7420,7422)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/197-ह०–2342)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/586-ह०–6510)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/246-ह०–10282)
(इब्ने अबी शैबा–10/463-ह०–35480)

## –: बन्दे के तीन दोस्त :–

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बन्दे के तीन दोस्त होते हैं एक दोस्त कहता है कि जब तक तुम ज़िन्दा रहोगे मैं तुम्हारे साथ हूँ जब तुम मर जाओगे तो फिर मेरा तेरा वास्ता ख़त्म हो जायेगा ये उसका माल है और दूसरा दोस्त कहता है कि मैं तेरे साथ उस वक़्त तक हूँ जब तक कि तू क़ब्र में न पहुँच जाये और जब तू क़ब्र में पहुँच जायेगा तो न तू मेरा न मैं तेरा ये उसके अह्ल व अयाल हैं और तीसरा दोस्त कहता है मैं तेरे साथ हमेशा रहूँगा जहाँ तू जायेगा मै तेरे साथ चलूँगा जहाँ तू दाख़िल होगा मैं भी दाख़िल होऊँगा और जहाँ से तू निकलेगा मैं भी निकलूँगा ये उसके आअ़माल हैं।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/294-42742)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/292-ह०–10476)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/745-ह०–1375)

# मुर्दे के साथ तीन चीज़ें जाती हैं

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मुर्दे के साथ तीन चीज़ें जाती हैं एक उसके अ़ज़ीज़ व अक़ारिब दूसरा उसका माल और तीसरा उसके आअ़माल फिर दो वापस लौट आती हैं और एक मुर्दे के साथ रह जाती है मुर्दे के साथ उसके घर वाले व माल और आअ़माल जाते हैं तो घर वाले और माल वापस लौट आते हैं और मुर्दा अपने अच्छे और बुरे आअ़माल के साथ क़ब्र में रह जाता है। (नसाई–सुनन–1/630-ह०–1914)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/217-ह०–2379)
(बुख़ारी–सही–6/90-ह०–6514)
(मुस्लिम–सही–6/469-ह०–7424)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/172–ह०-3339)

# आगे भेजा हुआ माल अल्लाह तआ़ाला की हिफ़ाज़त में

➡ हज़रत हसन (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ाला फ़रमाता है कि ऐ इब्ने आदम अपने ख़ज़ाने में से कुछ निकाल कर मेरे पास मेरे सपुर्द करदे तो तेरा वो माल जो तूने मेरे सपुर्द किया है न तो वो जलेगा और न ही डूबेगा और न चोरी होगा और जब तुझे उसकी ज़रुरत होगी तब मैं तुझे तेरा सब माल वापस कर दूँगा फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक

अल्लाह तआ़ला जब किसी भी चीज़ को बतौर अमानत रखता है तो उसकी हिफ़ाज़त भी फ़रमाता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/173–ह०-3342)
(कंज़ुल उ़म्माल–3/588–ह०-16021)

## हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने सारा माल सद्क़ा कर दिया

➡ हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हमें सद्क़ा करने का हुक्म दिया चुनांचा मैंने दिल में कहा कि अगर मैं हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ से सबक़त लेना चाहूँ तो आज ले सकता हूँ तो मैंने आधा माल रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में पेश कर दिया तो आपने पूछा कि ऐ उ़मर तुमने अपने घर वालों के लिये क्या छोड़ा मैंने कहा कि इसी क़दर छोड़ कर आया हूँ फिर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ अपना कुल माल आपके पास लाये तो आपने पूछा ऐ अबू बक्र तुम अपने घर वालों के लिये क्या छोड़ कर आये हो उन्होंने कहा कि मैं उनके लिये अल्लाह और उसके रसूल को छोड़कर आया हूँ तब मुझे ये कहना पड़ा कि मैं किसी भी शैः में कभी भी उनसे सबक़त नहीं ले सकता।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1045–ह०-3675)
(अबू दाऊद–सुनन–2/331–ह०-1678)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी का एहसान मुझ पर ऐसा नहीं कि जिसका बदला हमने न दिया हो

सिवाए अबू बक्र सिद्दीक़ के कि उनका एहसान जो हम पर है उसका बदला उनको अल्लाह तआला क़यामत के दिन अ़ता फ़रमायेगा और इतना नफ़अ़ मुझे किसी के माल ने नहीं दिया जितना नफ़अ़ मुझे अबू बक्र सिद्दीक़ के माल ने दिया। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1039–ह०-3661)

## हज़रत उ़स्मान का राहे ख़ुदा में सद्क़ा

हज़रत अ़ब्दुर्ररहमान बिन ख़ब्बाब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान करते हैं कि मैं हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और आप लश्करे उ़सरत के सामान की तर्ग़ीब दे रहे थे तो हज़रत उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ख़ड़े हुये और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह अल्लाह की राह में मय झोलों, मय पालान के सौ ऊँट मेरे ज़िम्मे हैं फिर आपने उसी लश्कर फिर तर्ग़ीब दी तो फिर हज़रत उ़स्मान ख़ड़े हुये और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह अल्लाह की राह में मय झोलों व मय पालान के दो सौ ऊँट मेरे ज़िम्मे हैं फिर आपने उसी तरह फिर तर्ग़ीब दी तो फिर हज़रत उ़स्मान ख़ड़े हुये और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह अल्लाह की राह में मय झोलों व मय पालान के तीन सौ ऊँट मेरे ज़िम्मे हैं सो रसूलुल्लाह मिम्बर से उतरे और फ़रमाया कि अब उ़स्मान पर किसी भी अ़मल का मुवाख़िज़ा नहीं होगा वो अब जो चाहें अ़मल करें अब वो मग़फ़ूर व मरहूम हैं। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1062–ह०-3700)

➡ हज़रत अ़ब्दुर्ररहमान बिन समुराह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि हज़रत उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) लश्कर की तैयारी के वक़्त

हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास आये और एक हज़ार दीनार आपको दिये फिर मैंने देखा कि रसूलुल्लाह अपनी गोद मुबारक में उनको उलट पलट करते थे फिर फ़रमाया कि अब ऊ़स्मान को उसका कोई अ़मल उसे नुक़सान नहीं देगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1063–ह०-3701)

## –: हक़ीक़ी मिस्कीन की अ़लामत :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मिस्कीन वो नहीं जिसे एक या दो लुक्मे इधर उधर घूमने पर मजबूर कर दें बल्कि हक़ीक़ी मिस्कीन वो है कि जो इस क़दर माल न पाये जो उसे बेनियाज़ करदे और वो लोगों से सुवाल करने में शर्म महसूस करे या वो लोगों से चिमट कर सुवाल न कर सके यानी हाजत के बावुजूद जो न माँगे वो हक़ीक़ी मिस्कीन है (बुख़ारी–सहीह–2/190–ह०-1476)
(मुस्लिम–सहीह–3/62–ह०-2393)
(अबू दाऊद–सुनन–2/300–ह०-1631, 1632)
(नसाई–सुनन–4/331–ह०-2572)

**इरशादे बारी तआ़ाला है:–**
(ख़ैरात) उन फुक़रा का हक़ है जो अल्लाह की राह में (कस्बे मआ़श से) रोक दिये गये हैं वो (उमूरे दीन में हमा वक़्त मशगूल रहने के बाइस) ज़मीन में चल फिर भी नहीं सकते उनके (जुहदन) तमआ़ से बाअ़ज़ रहने के सबब नादान (हैं जो उनके हाल से बे ख़बर हैं वो) उन्हें मालदार समझे हुये हैं तुम उन्हें उनकी सूरत से पहचान लोगे वो लोगों से बिल्कुल सुवाल ही नहीं करते

कि कहीं (मख़्लूक़ के सामने) गिढ़ गिढ़ाना न पड़े और तुम जो भी माल ख़र्च करोगे तो बेशक अल्लाह तआ़ला खूब जानता है। (सूरह–बक़राह–2/273)

## बिला हाजत माल बढ़ाने की ग़रज़ से माँगना गोया आग के अंगारे माँगना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अपना माल बढ़ाने की ग़रज़ से लोगों से माल माँगता है तो गोया वो दोज़ख़ के अंगारे माँगता है ख़्वाह वो कम माँगे या ज़्यादा उसकी मर्ज़ी। (मुस्लिम–सहीह–2/377–ह०-2399)
(इब्ने माजा–सुनन–1/622–ह०-1838)
(अबू दाऊद–सुनन–2/297–ह०-1629)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/222–ह०-3517)

## रोज़े क़यामत बिला हाजत माँगने वाले के चेहरे पर गोस्त नहीं होगा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स (मुहताज न होने के बावुजूद) मुसलसल लोगों से सुवाल करता रहे वो क़यामत के दिन इस हाल में आयेगा कि उसके चेहरे पर गोस्त का एक टुकड़ा भी न होगा।
(बुख़ारी–सहीह–2/189–ह०-1474)
(मुस्लिम–सहीह–2/376–ह०-2396)
(नसाई–सुनन–4/342–ह०-2586)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/220–ह०-3509)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने मुहताज न होने के बावुजूद भी माँगा तो रोज़े क़यामत उसका माँगना उसके चेहरे पर ज़ख़्म (बदनुमा दाग़ की तरह) होगा और चेहरे पर ख़राशों के जैसे नौचे हुये की सूरत में ज़ाहिर होगा अ़र्ज़ की गई या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मुहताज होने की हद क्या है आपने फ़रमाया कि पचास दिरहम या उस-की क़ीमत के बराबर सोना।
(इब्ने माजा–सुनन–1/622–ह०-1840)
(अबू दाऊद–सुनन–2/295–ह०-1626)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/220–ह०-35010)

## तीन क़िस्म के लोगों का माँगना नाजाइज़ है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मालदार, सेहतमंद और ताक़तवर शख़्स का माँगना जाइज़ नहीं।
(नसाई–सुनन–4/350–ह०-2598)

## तीन क़िस्म के लोगों का माँगना हलाल है

➡ हज़रत क़बीसा बिन मुख़ारिक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तीन क़िस्म के लोगों का माँगना जाइज़ है एक वो शख़्स जो किसी

अम्रे ख़ैर में क़र्जदार हो जाये तो उसका माँगना हलाल हो जाता है यहाँ तक कि उसको इतना माल मिल जाये कि उसकी ज़रुरत पूरी हो जाये फिर वो न माँगे दूसरा वो शख़्स जिसके माल में आफ़त पहुँची हो कि जिससे उसका माल ज़ाया हो गया हो तो उसका माँगना हलाल हो जाता है यहाँ तक कि उसको इतना माल मिल जाये कि उसकी ज़रुरत पूरी हो जाये तीसरा वो शख़्स जिसके तीन दिन फ़ाक़ा में गुज़र जायें तो उसका माँगना हलाल हो जाता है यहाँ तक कि उसको इतना माल मिल जाये कि जिससे उसकी गुज़र बसर होने लगे इनके अ़लावा जो माँगता है वो हराम खाता है।
(मुस्लिम–सहीह–2/379–ह०-2404)
(नसाई–सुनन–4/345–ह०-2592)

## जो माँगने से बचे तो अल्लाह उसे बचाता है

➡हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो माँगने से बचे तो अल्लाह तआ़ला उसे माँगने से बचाता है और जो अपने दिल को बेपर‘वाह रखे तो अल्लाह तआ़ला उसे बेपर‘वाह कर देता है और जो सब्र करता है अल्लाह तआ़ला उस पर सब्र को आसान कर देता है और जो कुछ तुममें से किसी को अल्लाह तआ़ला अ़ता करे वो बेहतर है और सब्र से बढ़कर कोई भी ऐसी नेअ़मत वुसअ़त व कुशादगी वाली नहीं जो अल्लाह तआ़ला ने किसी को दी हो। (मुस्लिम–सहीह–3/71–ह०-2424)
(अबू दाऊद–सुनन–2/310–ह०-1644)
(नसाई–सुनन–2/178–ह०-2592)

# जो किसी से कुछ न माँगे उसे जन्नत की ज़मानत

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कौन है जो मुझे ये ज़मानत दे कि वो किसी से कुछ नहीं माँगेगा तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत दूँ तो हज़रत सूबान ने कहा ''मैं''। (अबू दाऊद–सुनन–2/309–ह०-1643)
(नसाई–सुनन–2/179–ह०-2594)

# जब कोई हाजत हो तो अल्लाह के हुजूर पेश करो

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसे कोई इन्तिहाई शदीद हाजत आ पड़े और उसने उसे लोगों पर पेश कर दिया तो उसकी हाजत दूर न होगी और जिसने अपनी हाजत को अल्लाह तआ़ाला के हुजूर पेश किया तो अ़नक़रीब अल्लाह तआ़ाला उसे बेपर'वाह कर देगा। (अबू दाऊद–सुनन–2/311–ह०-1645)

# –: क़नाअ़त वाला शख़्स कामयाब :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तहक़ीक़ कामयाब हो गया वो शख़्स जिसने इस्लाम कुबूल किया

और उसे बाक़दरे किफ़ायत (ज़रुरत के मुताबिक़) रिज़्क़ दिया गया और अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़ता कर्दा माल पर क़नाअ़त अ़ता कर दी तो वो शख़्स कामयाब हुआ। (मुस्लिम–सहीह–3/71–ह०-2426)
(इब्ने माजा–सुनन–3/358–ह०-4138)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/201–ह०-2348)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/261–ह०-10345)

## आले रसूल को सद्क़ा देना जाइज़ नहीं

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत इमाम हसन बिन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिमस्सलाम) ने सद्क़े एक खजूर अपने मुँह में रखी तो नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि थू थू इसे फेंक दो क्या तुम नहीं जानते कि हम लोग सद्क़ा नहीं खाते। (मुस्लिम–सहीह–2/416–ह०-2473)

➡ हज़रत रबीआ़ बिन हारिस रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सद्क़ा व ख़ैरात आले रसूल और मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के लिये हलाल नहीं है।
(नसाई–सुनन–4/359–ह०-2610)
(मुस्लिम–सहीह–2/418–ह०-2481)

## आले रसूल को हदिया जाइज़

➡ हज़रत बहज़ बिन हकीम रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमते अक़्दस में जब कोई चीज़ पेश की जाती थी तो आप दरयाफ़्त फरमाते थे कि ये हदिया है या सद्क़ा ख़ैरात अगर वो सद्क़ा होती तो आप नहीं लेते अगर हदिया होती तो आप कुबूल फ़रमां लेते। (नसाई–सुनन–4/362–ह०-2614)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को जब खाना पेश किया जाता तो आप उसके बारे में पूछते अगर ये कहा जाये कि तोहफ़ा है तो उसे खा लेते और अगर कहा जाये कि सद्क़ा है तो नहीं खाते थे।
(मुस्लिम–सहीह–2/423–ह०-2491)

➡उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं बरीरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को लोग सद्क़ा देते थे और वो हमें तोहफ़ा देती थीं तो मैंने इसका तज़किरा हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से किया तो आपने फ़रमाया कि वो उस पर सद्क़ा है और हमारे लिये हदिया है पस तुम उसमें से खाओ। (मुस्लिम–सहीह–2/422–ह०-2487)
(नसाई–सुनन–4/362–ह०-2615)

## –: सद्क़ा फ़ित्रा :–

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़दार को लग़्व और बेहूदा बातों से पाक करने के लिये और मसाकीन को खिलाने के लिये सद्क़ा फ़ित्रा मुक़र्रर किया गया है

लिहाज़ा जो ईद की नमाज़ से पहले सद्क़ा फ़ित्रा अदा करे उसका सद्क़ा मक़बूल है और जो नमाज़ के बाद अदा करे तो अ़ाम सद्क़ों में से एक सद्क़ा है।
(इब्ने माजा–सुनन–1/618–ह०-1827)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/406–ह०-677)
(अबू दाऊद–सुनन–2/279–ह०-1609)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर मुसलमान छोटे बड़े, मर्द अ़ौरत और आज़ाद व गुलाम पर निस्फ़ (आधा) साअ़ गेहूँ एक साअ़ खजूर या जौ सद्क़ा फ़ित्रा मुताअ़य्यन (फ़र्ज़) किया गया है और ईद की नमाज़ से पहले अदायगी का हुक्म दिया है।
(बुख़ारी–सहीह–2/206–ह०-1503)
(मुस्लिम–सहीह–2/321–ह०-2278)
(इब्ने माजा–सुनन–1/618–ह०-1826)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/406–ह०-676)
(अबू दाऊद–सुनन–2/281–ह०-1611)
(नसाई–सुनन–1/600–ह०-1583)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हमें हुक्म फ़रमाया कि सद्क़ा फ़ित्रा ईद की नमाज़ से पहले अदा करो।
(मुस्लिम–सहीह–2/325–ह०-2288)
(नसाई–सुनन–2/149–ह०-2525)

एक साअ़ दो किलो सौ ग्राम होता है और एक वस्क़ साठ साअ़ होता है (इब्ने माजा–सुनन–1/620–ह०-1832)

# -: ज़कात के मसाइल :-

## -: फलों और अनाज पर ज़कात देना :-

**इरशादे बारी तअ़ाला है:-**
और वो (अल्लाह) ही है जिसने तरह तरह के बाग़ात पैदा फ़रमाये जिनमें से कुछ (बेलदार हैं जो) जो सहारों से ऊपर चढ़ाये जाते हैं और कुछ सहारों के बग़ैर ही बुलन्द होते हैं और खजूर के दरख़्त और तरह तरह की खेती जिसके ज़ायक़े मुख़्तलिफ़ हैं और ज़ैतून और अनार और जो मुशाबा भी हैं और ग़ैर मुशाबा भी हैं जब (ये दरख़्त) फल लायें तो तुम उनके फल खाया भी करो और उस (खेती और फल) के कटने के दिन उस का हक़ अदा करो (जो अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ से मुक़र्रर है) और फ़िज़ूल खर्ची न किया करो बेशक वो फ़िज़ूल खर्ची करने वालों को पसन्द नहीं करता।
(सूरह-अनअ़ाम-6/141)

**इरशादे बारी तअ़ाला है:-**
ऐ ईमान वालो उन पाकीज़ा कमाइयों में से और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला है (अल्लाह की राह में) ख़र्च किया करो और उसमें से गन्दे माल को (अल्लाह की राह में) ख़र्च करने का इरादा न करो कि तुम खुद उसे हरगिज़ न लो (सूरह-बक़राह-2/267)

## -: ज़कात कब फ़र्ज़ होती है :-

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया किसी

माल में ज़कात फ़र्ज़ नहीं यहाँ तक कि उस पर साल गुज़र जाये। (इब्ने माजा–सुनन–1/605–ह०-1792) (तिर्मिज़ी–सुनन–1/384–ह०-631)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि जिसके पास दो सौ या दो सौ से ज़्यादा दिरहम हों तो उस पर ज़कात फ़र्ज़ है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/838–ह०-3316)

## –: सोने व चाँदी की ज़कात :–

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने घोड़े व गुलाम पर ज़कात मुआ़फ़ की और चाँदी की ज़कात हर चालीस दिरहम में एक दिरहम है और नहीं लेता मैं सोने की ज़कात जब तक दो सौ दिरहम न हो और दो सौ दिरहम में से पाँच दिरहम है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/378–ह०-620)
(नसाई–सुनन–4/262–ह०-2479)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब तुम्हारे पास दो सौ दिरहम हों और उन पर एक साल गुज़र जाये तो उन पर पाँच दिरहम ज़कात है और सोने में तुम पर कुछ नहीं जब तक कि तुम्हारे पास बीस दीनार न हो जायें और जब बीस दीनार हो जायें और उन पर एक साल हो जाये तो उनमें आधा दीनार देना होगा यानी चालीसवाँ हिस्सा
(अबू दाऊद–सुनन–2/246–ह०-1573)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि पाँच ऊक़िया से कम चाँदी में ज़कात नहीं और पाँच ऊँटों से कम में ज़कात नहीं है और पाँच वस्क़ से कम गल्ले में ज़कात नहीं। (बुख़ारी–सहीह–2/147–ह०-1405, 1484)
(मुस्लिम–सहीह–2/317–ह०-2263)
(इब्ने माजा–सुनन–1/606–ह०-1794)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/382–ह०-626)
(अबू दाऊद–सुनन–2/228–ह०-1558)
(नसाई–सुनन–4/235–ह०-2447, 2448)

एक ऊक़िया चालीस दिरहम के बराबर है और पाँच ऊक़िया में दो सौ दिरहम होते हैं जो साढ़े बावन तोले के बराबर हैं इसी तरह एक वस्क़ साठ साअ़ का है और एक साअ़ दो सौ चौंतीस तोला याअ़नी दो किलो सौ ग्राम के बराबर है और सोने का निसाब ये था उस दौर में दो सौ दिरहम बीस दीनार के बराबर होते थे और बीस दीनार का वज़न साढ़े सात तोला बनता था बाअ़ज़ उल्माए किराम फ़रमाते हैं कि एक दिरहम चाँदी का वज़न 2.975 ग्राम और एक दीनार का वज़न 4.25 ग्राम होता है इस तरह चाँदी का निसाब 595 पाँच सौ पच्चानवे ग्राम और सोने का निसाब 85 पच्चासी ग्राम होगा पस अगर इस मिक़दार में किसी के पास सोना या चाँदी मौजूद है या सोना, चाँदी और रुपया वग़ैराह मौजूद है और इन सब को मिलाकर वो इस निसाब को पहुँचता है तो उस पर ज़कात फ़र्ज़ हो जायेंगी बशर्ते ये कि उस पर साल गुज़र जाये।

## –: ज़मीन की पैदावार में ज़कात :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसको आसमान पानी दे यानी बारिश के पानी से पैदावार हो या नहरें पानी दें उसमें दसवाँ हिस्सा ज़कात है और जिस खेती में पानी खींचकर या ऊँट या बैल से तो उसमें बीसवाँ हिस्सा ज़कात है। (बुख़ारी–सहीह–2/194–ह०-1483)
(मुस्लिम–सहीह–3/15–ह०-2272)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/388–ह०-639)
(अबू दाऊद–सुनन–2/271–ह०-1597)
(नसाई–सुनन–2/138–ह०-2492)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वआलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि पाँच वस्क़ से कम गल्ले में ज़कात नहीं। (बुख़ारी–सहीह–2/147–ह०-1405)
(मुस्लिम–सहीह–2/317–ह०-2263)
(इब्ने माजा–सुनन–1/606–ह०-1794)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/382–ह०-626)
(अबू दाऊद–सुनन–2/228–ह०-1558)
(नसाई–सुनन–4/235–ह०-2447, 2448)

## –: साग सब्ज़ी में ज़कात नहीं :–

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि उन्होंने अ़र्ज़ किया या ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम)

साग और सब्ज़ी की ज़कात का क्या हुक्म है तो आप ने फ़रमाया कि इसमें कुछ ज़कात नहीं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/387–ह०-638)

## –: गाय और बैल की ज़कात :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तीस गायों में से एक साल की एक गाय या बैल है और हर 40 में से दो बरस की एक गाय है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/380–ह०-622, 1804)
(नसाई–सुनन–2/126–ह०-2454)

## –: ऊँट और बकरियों की ज़कात :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ज़कात की पूरी तफ़्सील लिखी थी मगर उसे अपने आ़मिलों के पास भेज नहीं पाये थे कि अपकी वफ़ात हो गई चुनांचा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने उस पर अ़मल किया जब उनकी वफ़ात हो गई तो फिर हज़रत उ़मर ने उस पर अ़मल किया और फिर उनकी वफ़ात हो गई उसमें ये तहरीर था पाँच ऊँटों की ज़कात एक बकरी और दस में दो और पन्द्रह में तीन और बीस में चार बकरियाँ और पच्चीस ऊँटों में एक साला मादा ऊँटनी पैंतीस ऊँटों तक है और अगर पैंतीस से ज़्यादा हों तो दो बरस की ऊँटनी पैंतालीस ऊँटों तक है फिर पैंतालीस से साठ ऊँटों तक तीन साल की ऊँटनी फिर

साठ से पचहत्तर ऊँटों तक चार साल की ऊँटनी फिर पचहत्तर से नब्बे ऊँटों तक दो साल की दो ऊँटनीयाँ फिर नब्बे से एक सौ बीस तक तीन तीन साल की दो ऊँटनीयाँ अगर इससे ज़्यादा हों तो हर पचास में एक ऊँटनी तीन साल की है और बकरियों की ज़कात हर चालीस में एक बकरी है एक सौ बीस बकरी तक और एक सौ बीस से दो सौ तक दो बकरी है और दो सौ से तीन सौ तक तीन बकरी हैं फिर अगर तीन सौ से ज़्यादा हों तो हर सैंकड़े में एक बकरी ज़कात है।
(इब्ने माजा–सुनन–1/607–ह०-1798)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/379–ह०-621)
(अबू दाऊद–सुनन–2/240–ह०-1568)
(नसाई–सुनन–2/123–ह०-2451)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि पाँच ऊँटों से कम में ज़कात नहीं है। (बुख़ारी–सहीह–2/147–ह०-1405)
(मुस्लिम–सहीह–2/317–ह०-2263)
(इब्ने माजा–सुनन–1/606–ह०-1794)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/382–ह०-626)
(अबू दाऊद–सुनन–2/228–ह०-1558)
(नसाई–सुनन–4/235–ह०-2447, 2448)

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने उनको यमन की तरफ़ भेजा तो उनसे फ़रमाया कि गल्ले से गल्ला व बकरियों से बकरी और ऊँट से ऊँट और गायों से गाय की ज़कात वसूल करना। (अबू दाऊद–सुनन–2/272–ह०-1599)

# -: अंगूर व खजूर की ज़कात :-

➡ हज़रत अत्ताब बिन असीद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हुक्म दिया कि अंगूरों के कच्चे फल का अंदाज़ा लगाया जाये वो कितने हैं और उनकी ज़कात उस वक़्त ली जाये जब वो दरख़्त से उतर कर सूख जायें कि जिस तरह ख़जूर के खुश्क होने पर ज़कात ली जाती है और इसकी चौथा हिस्सा ज़कात है। (अबू दाऊद–सुनन–2/275–ह०-1603) (नसाई–सुनन–2/139–ह०-2495)

# पड़ी हुई व गढ़ी हुई चीज़ की ज़कात

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि गढ़े हुये माल पर पाँचवाँ हिस्सा ज़कात है (बुख़ारी–सही–2/203–ह०-1499) (अबू दाऊद–सुनन–02/353–ह०-1710)

➡ हज़रत अम्र बिन शुऐब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया पड़ी हुई चीज़ अगर किसी को मिले तो एक साल तक उसका ऐअ़लान और शोहरत करो और अगर उसका मालिक मिल जाये तो उसे वापस करदो अगर एक साल तक उसका मालिक न आये तो वो उसकी है जिसको पड़ी मिली है और वो उस चीज़ का पाँचवाँ हिस्सा ज़कात दे।
(नसाई–सुनन–2/140–ह०-2498)

# सोने चाँदी की ज़कात अदा न करना अ़ज़ाब बाइस है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में एक ख़ातून आयी और उनके साथ उनकी बेटी भी थी जिसके हाथ में सोने के दो मोटे मोटे कंघन थे आपने उस ख़ातून से पूछा कि क्या तुम इसकी ज़कात देती हो उसने कहा नहीं आपने फ़रमाया क्या तुम्हें ये बात अच्छी लगती है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला तुम्हें आग के दो कंघन पहनाये चुनांचा उस औ़रत ने उनको उतारा और रसूलुल्लाह के सामने डाल दिये और वो कहने लगी ये अल्लाह और उसके रसूल के लिये हैं।
(अबू दाऊद–सुनन–2/234–ह०-1563)
(नसाई–सुनन–4/263–ह०-2481)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मेरे हाथों में चाँदी की अंगूठियाँ थीं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझसे पूछा कि ऐ आयशा क्या तुम इनकी ज़कात देती हो तो मैंने कहा नहीं तो आपने फ़रमाया तुम्हें दोज़ख़ में ले जाने के लिये यही काफ़ी हैं
(अबू दाऊद–सुनन–2/235–ह०-1565)

इस्लाम में सोना चाँदी चाहे दिरहम व दीनार या करेंसी की शक्ल में हो या किसी और शक्ल में और मवेशियों वग़ैराह हर जिन्स के लिये अलग अलग ज़कात फ़र्ज़ की गयी है व उनका अलग अलग निसाब मुतअ़य्यन किया

गया है इसी तरह खेती और फल वग़ैराह का निसाब भी अलग अलग मुक़र्रर है सोना, चाँदी, माल वग़ैराह पर साल गुज़र जाये उस पर मुक़र्ररा शरई अहकामात के मुताबिक़ ज़कात अदा करना फ़र्ज़ है अगर निसाब पूरा न हो या साल न गुज़रे तो ज़कात फ़र्ज़ न होगी सोना और चाँदी दोंनों को मिलाकर मजमूई हैसियत से निसाब को पहुँचती हो मसलन सोने का आधा निसाब व चाँदी का आधा निसाब मौजूद हो तो उस पर ज़कात की अदायगी फ़र्ज़ हो गई या फिर कुछ सोना और कुछ चाँदी और कुछ माल (रुपया वग़ैराह) व माले तिजारत सबको मिलाकर अगर निसाब को पहुँचते हों तो उसमें से चालीसवाँ हिस्सा ज़कात अदा की जायेगी वरना नहीं

और अगर किसी के पास चाँदी या सोना नहीं है सिर्फ़ रुपया है या रुपया और माले तिजारत है तो चाँदी या सोने के निसाब के बराबर रुपयों व माले तिजारत की ज़कात अदा की जायेगी बशर्ते ये कि साल गुज़र जाये और क़र्ज़ अदा करने के बाद जो बचे उस पर ज़कात फ़र्ज़ है ग़रज़ ये कि मुसलमान के पास क़र्ज़ अदा करने के बाद जो सोना, चाँदी, रुपया, माले तिजारत वग़ैराह हो तो सब तरह के माल को जोड़कर अगर वो सोना या चाँदी के निसाब को पहुँचे तो ज़कात देना फ़र्ज़ है।

★★★★★

अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल अ़ालमीन अल्लाह तअ़ाला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ से और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इ़नायत और रहमो करम और अह्ले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलियाकिराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से इस फ़क़ीर ने इस किताब की तालीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था अल्लाह तअ़ाला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे और मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर और मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये– **आमीन**

और इस किताब को बराये ईसाले सवाब मुअ़ल्लिफ़ के वालिदे गिरामी मरहूम जनाब ईद मुहम्मद वारसी साहब की रुह को अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाये व अपने हबीब के सद्क़े उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये–**आमीन**

नोट– जो हज़रात अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब या अपने वालिदैन के ईसाले सवाब या दीनी तबलीग़ या सवाब पाने की नीयत से इस किताब को छपवाकर लोगों में तक़सीम करना चाहते हैं वो बराहे रास्त हम से राब्ता क़ायम करें। 9897626182, 9045442223

डा० आज़म बेग क़ादरी
Mob-09897626182

ISBN 978-93-5717-292-9